अंक : 2

ऋतुरंग

भारत सरकार
भारत मौसम विज्ञान विभाग

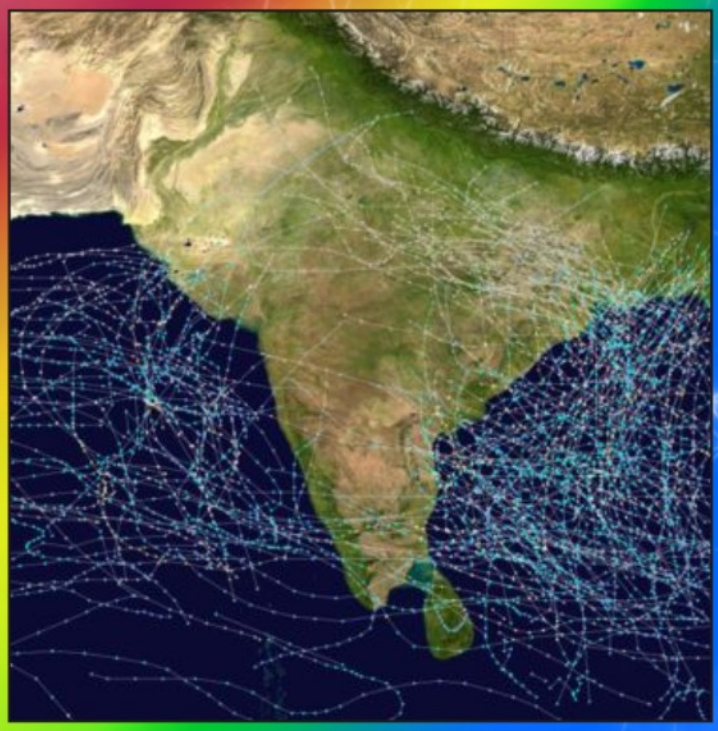

भारत मौसम विज्ञान विभाग
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
प्रादेशिक मौसम केन्द्र, विमानतल,
नागपुर–४४०००५ (महाराष्ट्र)

ऋतुरंग

(प्रादेशिक मौसम केन्द्र,नागपुर की गृह पत्रिका)

प्रमुख संरक्षक

डॉ. पी.के.नंदनकर

उपमहानिदेशक

प्रादेशिक मौसम केन्द्र,नागपुर

संरक्षक

एच.ए.के.सिंह

निदेशक,प्रा.मौ.कें.नागपुर

संपादक

श्रीमती शांता उन्नीकृष्णन, वरीष्ठ हिंदी अनुवादक

सहयोगी सदस्य

1. श्री.एस.एन.बिद्यांता,वै.स. 2. श्री.एम.आर.कान्होलकर,वै.स. 3. एम.एम.फडके,वै.स.

पत्र व्यवहार का पता

संपादक- ऋतुरंग, प्रादाशक मासम कद्र, हवाइ अड्डा, नागपुर-440005

(इस अंक में प्रकाशित रचनाओं से संपादक मंडल सहमत हो अनिवार्य नहीं एवं रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेदार है ।)

महानिदेशक
भारत मौसम विज्ञान विभाग
मौसम भवन, लोदी रोड
*नई दिल्ली- **110003***

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि प्रकृति मे बदलते ऋतुओ कि तरह प्रादेशिक मौसम केद्र-नागपुर की विभागीय हिंदी गृह पत्रिका ***ऋतुरंग*** के द्वितीय अक का प्रकाशन किया जा रहा है।

कार्यालय मे कार्यरत कर्मियो व्दारा अपने विचारो को प्रकट करने का यह एक सशक्त माध्यम है । हिंदी भाषा एक ऐसी भाषा है जो सरल, मधुर और सुबोध है जिसके माध्यम से हम अपने कल्पनाओं को एक दूसरे के साथ बाँट सकते है या पहुँचा सकते है ।

राजभाषा हिंदी को कामकाज के दृष्टिकोण से सरल, बोधगम्य विकसित करने मे **ऋतुरंग पत्रिका** एक रचनात्मक वातावरण निर्मित करने मे उपयोगी है । मेरा आप सभी से आग्रह है कि अपने दैन-दिन कार्यों मे सहज एव सरल हिंदी का प्रयोग कर राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार मे सदैव अग्रसर रहे ।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए संपादक मंडल और उससे जुड़े सभी सदस्यो को शुभकामनाएँ देता हूँ ।

(डॉ. लक्ष्मण सिंह राठोड़)

उपमहानिदेशक
प्रादेशिक मौसम केंद्र
नागपुर-440005

उपमहानिदेशक महोदय की कलम से

प्रादेशिक मौसम केन्द्र, नागपुर व्दारा विभागीय हिंदी गृह पत्रिका ऋतुरंग के व्दितीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। व्दितीय अक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अतीव आनद को अनूभुति हो रही है ।

गृह पत्रिका के प्रकाशन से कायोलय के कर्मेयो को अपनी रचनात्मक कला एव चिंतन को उजागर करने और हिंदी को प्रगति पथ मे बढ़ाने का यह एक सुनहरा अवसर है । हिंदी के उपयोग को और अधिक प्रभावपूर्ण बनाने और सुनिश्चित करने के लिए कायोलय व्दारा हिंदी कायेशाला मे 'यूनिकोड' मानक भाषा के रूप मे प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है ।

मै कायोलय के सभी कर्मेको से आवाहन करता हूँ कि हिंदी के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए वार्षिक कायेक्रम मे दिए गए लक्ष्यो को पूरा करने का प्रयास करे और अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करे ।

पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यो को हार्दिक शुभकामनाओ के साथ बधाइ देता हूँ ।

(डॉ. पी.के.नंदनकर)

निदेशक
प्रादेशिक मौसम केंद्र
नागपुर-440005

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यत प्रसन्नता है कि कायोलय अपनी गृहपत्रिका ऋतुरग का द्वितीय अक प्रकाशित कर रहा है । निश्चित रूप से हिदी के प्रचार-प्रसार मे यह एक महत्वपूणे भूमिका निभाएगी ।

पत्रिका का पूवे अक ज्ञानवधेक, रोचक और सदेशात्मक था । मै पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यो और रचनाकारो को बधाइ एव शुभकामनाएं देता हूँ । लेखन प्रवृत्ति से कामेको को हिदी मे काये करने और राजभाषा को बढ़ावा देने मे महत्वपूणे योगदान होगा ।

ऋतुरंग पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हादिक शुभकामनाओ के साथ बधाइया ।

(**डॉ. एच.ए.के.सिंह**)

वरीष्ठ हिंदी अधिकारी
मौसम विज्ञान के महानिदेशक का
कार्यालय,मौसम भवन, लोदी रोड
*नई दिल्ली- **110003***

संदेश

माननीय गृह मत्री श्री राजनाथ सिह जी ने हिदी दिवस पर अपने सदेश मे कहा है कि "किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति केवल अपनी भाषा मे ही संभव है । अपनी भाषा के प्रति प्रेम हमारे राष्ट्रप्रेम को भी मजबूत बनाता है"

मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति अपनी भाषा मे करते हुए 'ऋतुरंग' का यह दूसरा मौसम है । मुझे खुशी है कि प्रादेशिक मौसम केद्र, नागपुर अपनी हिदी गृह पत्रिका ऋतुरग का दूसरा सस्करण निकाल रहा है । बहुत बहुत बधाइ । साथ ही मै उन सभी रचनाकारो को भी बहुत बहुत शुभकामनाए देती हूँ जिनकी वजह से ऋतु मे इतने सारे रग भरे जा सके ।

रग भरने का यह सिलसिला जारी रहे ।

शुभकामनाओ सहित ।

(रेवा शर्मा)

सहायक मौसम विज्ञानी-I(प्र)
एवं हिंदी संपर्क अधिकारी
प्रादेशिक मौसम केंद्र
नागपुर-440005

संदेश

राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करते हुए कार्यालय की गृहपत्रिका ऋतुरंग अपना द्वितीय अंक प्रकाशित कर रहा है जो हिंदी के प्रगति पथ पर एक शुभ संकेत है ।

पत्रिका के माध्यम से रचनाकारों को अपने अंदर छिपी हुई कला को उजागर करने का यह एक शुभ अवसर प्राप्त हुआ है । विविध रंगों से सजी पत्रिका के प्रथम अंक की तरह ही उसका द्वितीय अंक भी रोचक, आकर्षक और उत्साहवर्धक हो इसी कामना के साथ मैं गृह पत्रिका के संपादक मंडल और रचनाकारों को शुभकामना और बधाई देता हूँ ।

इस पत्रिका की सफलता एवं विकास की कामना करता हूँ ।

(□□.□□.**देशभ्रतार**)

संपादकीय

बदलते ऋतुओं के साथ 'ऋतुरंग' भी अपनी विविध प्रतिभाओ के साथ आपके समक्ष उपस्थित है । इस व्दितीय अक को प्रस्तुत करते हुए अत्यधिक आनद का एहसास हो रहा है । महानिदेशक डॉ.एल.एस.राठोड महोदय ने प्रथम अक मे लेखको और पत्रिका से जुड़े सपादक मडल के कार्यो की सराहना की है जो कि कार्मिको के लिए प्रेरणात्मक और उत्साहवर्धक सिध्द हुआ । जैसा कि प्रथम अक मे आप सबके लेख, कविताएँ, सुविचार और अन्य ज्ञानवर्धक सामग्रियो से पत्रिका का स्तर □□□ □□ □□□ □□□ उसी तरह आनेवाले अको के लिए आप सबके सहयोग की अपेक्षा है । विविध प्रतिभाओ, चिंतन, लेखन शैली और ज्ञानवर्धक लेखो से राजभाषा के इस मच को सजाया □□□□ □□ □□□□ □□□

हिंदी के प्रचार-प्रसार का यह एक अनूठा माध्यम है । राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित वार्षिक लक्ष्यो की आपूर्ति के लिए आप सभी सदस्य भरसक प्रयास करे और अपना सहयोग दे । मेरा आप सभी अधिकारियो/ कर्मचारियो से विनम्र निवेदन है कि हिंदी मे कार्य करने की प्रवृत्ति को बनाए रखे साथ ही अधिकाधिक रचनाएँ प्रेषित करे ताकि इसकी वर्तमान स्वरूप एव उत्कृष्टता □□ □□□□ □□ □□□□

हिंदी के प्रचार-प्रसार एव हिंदी मे कार्य करने मे लोगो की अभिरूचि को बनाए रखने मे ऋतुरग पत्रिका एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहे ऐसी कामना करती हूँ ।

पत्रिका की गुणवता मे और अधिक निखार लाने के लिए आप सबके सुझाव एव प्रतिक्रिया का सहर्ष स्वागत □□

शांता

(शांता उन्नीकृष्णन)

अनुक्रमणिका

लेख/रिपोर्ट

- डापलर रडार आर नाउकॅस्टींग- *डी.पी.सांधोकर.* **10**
- साक्षात्कार- *शांता उन्नीकृष्णन* **12**
- सटाक मासम पूवानुमाना म आधुानक तकनाका का यागदान- *ए.वी.गोडे* **17**
- जोस इवान का 'जलवास'- एक सत्य कथा- *डी.एस.गायकवाड* **23**
- पृथ्वा पर बढ़ता पयावरण असतुलन एव प्रभाव-*आर.डी.मेश्राम* **26**
- जावन सफल बनान का कुजा-*एस.एन.बिदयांता* **31**
- नागपुर वधशाला म दज का गइ मानसून ऋतु -2015 का ावशष मासमा घटनाए-*एस.एस.अंबरते* **34**
- साहित्य एवं कथा साहित्य: नये युग का सूत्रधार--*अपूर्वा सिंहरौल* **37**
- भारताय प्रायदाप म मानसून-*पी.एल.देवांगन* **46**
- क्या आप जानते है ? इस हारा का- *शांता उन्नीकृष्णन* **52**
- सामाजिक बुराइया स मुक्त हतु समग्र क्रात की आवश्यकता-*एस.के.कॉंगे* **54**
- जलप्रबध- *डॉ. जी.डी.मिश्रा* **60**
- जान का अदाज तथा सुावचार-*डी.पी.सांधोकर* **61**
- मासम ावज्ञान का शिक्षा सफल खता का चमत्कार- *डॉ. रवीन्द्र आकरे* **62**

कविता

- हमारा ऋतुरंग- *ए.एम.भट्ट* **9**
- य कसा बात करत हा ?- *आर.एन.यादव* **16**
- दश का सफाइ- *जी.एम.शहारे* **22**
- माँ-- *एम.आर.कान्होलकर* **25**
- पृथ्वा का ावरासत ह बाटया- *डॉ. जी.डी.मिश्रा* **35**
- करना ह उत्थान साथी- *ए.एम.भट्ट* **43**
- अंजन- *डी.एस.गायकवाड* **44**
- चार पाक्तया- *आर.एन.यादव* **49**
- अण्णा का ललकार- *आर.डी.मेश्राम* **50**
- कुत्ता का सम्मलन- *एस.एन.बिदयांता* **57**
- हिंदी पखवाडा-2015 (प्रा.मौ.के.नागपुर फोटो) **64**
- हिंदी पखवाडा-2015 (मौ.के.भोपाल फोटो) **66**

हमारा ऋतुरंग

- ए.एम.भट्ट, वै.स.,मौ.का.अंबिकापुर

नव किसलय नव किरण कमल सी, नव नंदन नव नवल विमल सी ।

ऋतु सौरव की तुम फुल नवल, मृणाल सी कोमल तुम एक कमल ।

तुम राग मधुर है गीतों की, तुम सुन्दर बन्धन हो रीतों की ।

बसंती फुलों की खूशबू तेरे पन्नों में, शब्दों में मधुकर की गुनगुन ।

छटा तेरी निराली, रचनाएँ अनुपम रसवाली ।

पाठक तेरे मतवाले, सब मौसम विभाग वाले ।

उर्वशी करें तुम्हें नमन, चूमें पग कमल वृहद चमन ।

सुख का सारा सार मिले, ऋतुरंग लेखनी का भंडार बने ।

मिले इंदू - दिवाकर- नभ तारक, ऋतुरंग आपको हो मुबारक ।

****

डॉपलर रेडार और नाउकॅस्टींग

- डी.पी.सांधोकर, स.मौ.वि.-I, प्रा.मौ. के.,नागपुर

वतेमान युग यह विज्ञान का युग है । वतेमान मे लोग समय के साथ चलनेवाले है । सब्र का फल मीठा होता है । इस कहावत पर भरोसा नही । वतेमान मे जियो, कल किसने देखा, समय के साथ चलो । इस विचार के लोग ज्यादा मिलेगे । वतेमान मे जमाना इस्टट (तत्काल) सेवा और परिणाम का जमाना है । जैसे कि इंस्टट कॉफी, इस्टट लव, इंस्टट शादी और इस्टट तलाक भी । वैसे ही समय के साथ भारत मौसम विज्ञान विभाग भी पीछे नही है । जो भारत मौसम विज्ञान विभाग पूरे देश के लिये वेदर (सेवाएँ) सांवेस मुहैय्या करता है , (24,48,72 घटो का पूवोनुमान, हवाइ अड्डा पूवोनुमान आदि) इसके अलावा अब मौसम पूवोनुमान, आधे घंटे से लेकर तीन घंटे का होता गया है । वह मौसम का पूवोनुमान जो आधा घटे से तीन घटे के लिये किया जाता है उसे नाउकॅस्टीग कहते है । यह एक विशेष प्रकार की पूवोनुमान प्रणाली पूवोनुमान या मौसम की भविष्यवाणी करने के लिए अलग - अलग प्रकार के प्रेक्षण लिये जाते है । उसके लिये अलग-अलग प्रकार के उपकरण उपयोग मे लाये जाते है ''नाउकॅस्टीग'' प्रणाली मे उपयोग मे लाया जाता है ''डॉप्लर रेडार'' नाम का उपकरण, जो विभिन्न प्रकार के प्राडक्टस्, हर दस- दस मिनिटो मे दशोता है । इसे 'रिअल-टाईम' डिसप्ले बोला जाता है । इसमे खराब मौसम की जानकारी हर दस-दस मिनटो मे मिलती है । इसलिये नाउकॅस्टीग के लिये यह एक अभी तक का बेहतरीन उपकरण है ।

डॉप्लर रेडार के प्राडक्टस् खराब मौसम का स्थान, खराब मौसम की तीव्रता और मुव्हमेट (किस दिशा की ओर बढ़ रहा है) बताते है । साथ-साथ पवन का वेग, दिशा और पवन से सबंधित विक्षोभ की जानकारी मिलती है । उसी प्रकार से खराब मौसम से संबंधित बादलो का स्थान,उँचाई, रिफ्लेक्टीविटी और बादलो के अतेगत विक्षोभ की जानकारी हासिल होती है । खराब मौसम से संबंधित 'क्यूमुलोनिबस' नाम का मेघ है । जिसके कारण बिजली, मेघगजेन, भारी वषो, ओले गिरना, तेज गति का पवन, (जिससे पेड़ भी उखड़कर गिर जाते है), हवाइ अड्डे पर माइक्रोबस्ट आदि घटनाएँ होती है । इनके फलस्वरूप जन-जीवन अस्त-व्यस्त होता है । जान-माल की रक्षा हेतु इनका पूवोनुमान करना जरूरी है । नाउकॅस्टीग, प्रशासन को सावधानी के लिये और उचित कायेवाही हेतु (जान-माल की रक्षा) उपयोग किया जा सकता है । नाउकॅस्टीग के लिये, पूरे भारत देश भर मे 50 डॉप्लर रेडार प्रस्थापित करने का प्रस्ताव है । अभी तक तेरह (13) डॉप्लर रेडार प्रस्थापित किये जा चुके है । नागपुर क्षेत्र मे दो डॉप्लर रेडार नागपुर और भोपाल मे प्रस्थापित हो चुके है । डॉप्लर रेडार के कुछ महत्वपूणे प्राडक्टस निम्न प्रकार है :-

<u>व्ही.व्ही.पी.प्राडक्ट</u> :- यह प्राडक्ट व्हरिटेकल मोशन और माइश्चर इन्फरशन की जानकारी बताता है जिसमे आधी तूफान, मेघगजने, बारीश, ओले आदि, खराब मौसम सबंधित इव्हट्स आते है । साथ-साथ मे तापमान मे घट और बढ़ोत्तरी की भी जानकारी हासिल होती है ।

<u>मॅक्स - z - प्राडक्ट :-</u> इस प्राडक्ट से खराब मौसम का स्थान,बादल की उंचाइ, रिफ्लेक्टीविटी आदि जानकारी ज्ञात होती है । **रिफ्लेक्टिविटी का एकक है dbz.** | सामान्यत: 40 dbz और इससे ज्यादा की रिफ्लेक्टीविटी खराब मौसम का दशेक है । जैसे मेघ गजेन, भारी बारीश, ओले गिरना, विमानतल पर माइक्रो बस्ट । खुशी की बात है कि हर प्रादेशिक मौसम केन्द्र अब हर मोबाइल पर इस प्राडक्ट को अपलोड करने वाले है जिससे लोगो को अपनी जान-

माल की रक्षा के लिये सावधानी बरतने मे मदद मिलेगी । यह प्राडक्ट रगीन होने से आम आदमी को समझने मे आसान है । जैसे रिफ्लेक्टिविटी का नीला रग 40 dbz से कम अच्छा मौसम रिफ्लेक्टिविटी का सफेद रग 40 dbz

खराब मौसम की शुरूवात । रिफ्लेक्टिविटी का पीला रंग 40dbz 45 dbz खराब मौसम की मध्यम तीव्रता । रिफ्लेक्टिविटी का लाल रग 45 dbz 55 dbz खराब मौसम की तीव्रता ज्यादा ।

पी.पी.आय.व्ही. :- इस प्राडक्ट द्वारा किसी क्षेत्र मे कन्व्हरजस है या डायव्हरजस है इसकी जानकारी मिलती है । कनव्हरजंस है तो उस एरिया मे खराब मौसम रहेगा । इसे भी रिफ्लेक्टिविटी द्वारा नापा जाता है ।

रिफ्लेक्टिविटी का नीला रग 40 dbz से कम अच्छा मौसम ।

रिफ्लेक्टिविटी का सफेद रग 40 dbz खराब मौसम की शुरूवात ।

रिफ्लेक्टिविटी का पीला रंग 40 dbz से 45dbz खराब मौसम की मध्यम तीव्रता ।

रिफ्लेक्टिविटी का लाल रग 45 dbz से 55 dbz तीव्र खराब मौसम ।

अगर रिफ्लेक्टिविटी का नाम 50 dbz या उससे ज्यादा है तो उस क्षेत्र (एरिया) मे मेघ गजेन और वषो जरूर होती है । जैसा ही इस प्राडक्ट मे सफेद रग पीला होते हुए दिख जाता है तो अगले एक घटे के लिये उस एरिया जिस दिशा मे मेघ जा रहे है उस एरिया के लिये मेघ गजेन, बारिश, ओले की नाउकॅस्टीग कर सकते है । इन तीन प्राडक्ट्स का सयुक्त अभ्यास नाउकॅस्टीग के लिये बहुत उपयोगी है । नाउकॅस्टिंग शत प्रतिशत करेक्ट करने मे डॉप्लर प्राडक्टस की काफी मदद होती है ।

****

“सफलता का कोई रहस्य नहीं है। यह तैयारी, कड़ी मेहनत और असफलता से सीखने का ही परिणाम होता है।„

-कोलिन एल पावेल

साक्षात्कार

डॉ. पी.के.नंदनकर
उप महानदशक
प्रादाशक मासम,
नागपुर

डॉ. पी.के.नंदनकर से की गई भेंट वार्तालाप के कुछ अंश पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हैं ।

डॉ.पी.के.नंदनकर आपने नागपुर विश्वविद्यालय से वर्ष 1984 में भौतिक विज्ञान में एमएससी की और उसी विषय में नागपुर से 1994 में आपने पीएचडी की डिग्री हासिल किया आपने कई शोध पत्र लिखे है। भारत मौसम विज्ञान विभाग में आपने 2003 में कार्यग्रहण किया । आपने भारत मौसम विज्ञान विभाग लखनउ,पुणे, मुंबई कार्यालयों में कार्य किया है । वर्तमान में आप प्रादेशिक मौसम केन्द्र, नागपुर में उपमहानिदेशक के पद पर कार्यरत है। विभाग द्वारा आयोजित आठवें अंटारटिका अभियान में आ सहभागी रहे। सर आपके कार्यकाल में वर्ष 2011 में प्रादेशिक मौसम केन्द्र, नागपुर को सव म कार्यालय का पुरस्कार प्राप्त हुआ जिसके लिए आपको बहुत बधाई ।

शाता उन्नाकृष्णन: डॉ.पी.के.नंदनकर जी, कृपया हमार पाठका का बताए का प्रादाशक मासम कन्द्र नागपुर का स्थापना कब हुइ एव इसका उद्शय क्या था ?

डॉ. पी.के.नंदनकर: प्रादाशक मासम कन्द्र नागपुर का स्थापना प्रथमत: मया अस्पताल म वष 1869 म वधशाला क रूप म स्थापित का गइ तत्पश्चात वष 1947 म यह हवाइअड्डा नागपुर म स्थानातारत हुआ एव 14 अगस्त 1951 से वतमान प्रा.मौ.के. भवन का स्थापना हुइ । इसका कायक्षत्र विदभ, मध्यप्रदश आर छत्तासगढ़ ह । इसका स्थापना का उद्श्य क सदभ म याद बताए ता कहना हागा का पहला उद्श्य मासम क सबध म जानकारा दना ह । आप सभी जानत ह कि भारत कृष प्रधान दश ह । जावन का मुख्य आधार कृष था ता इसक लिए पहल मासम का पूव जानकारा दना था ताकि कृषका का फसल का तयारा करन म सुवधा हा । पहल इतना सटाक पूवानुमान उपलब्ध कराना आसान नहा था । लाकन अभा स्थितया म काफा पारवतन आया ह, आज अत्याधुनिक उपकरणा का सुवधाए उपलब्ध हान स पूवानुमान सटाक दन म कायालय सक्षम हा गया ह। वतमान म मासमा तत्वा का उपयोग जीवन के प्रत्यक क्षत्र म अभिन्न अग बन गया ह । मानव मासम सवाआ पर इतना अधिक निभर हा गया ह कि इसक बिना दनिक आचार- व्यवहार अधूरा ह । आज का स्थित म दखा हागा का मासम का उपयागिता निवास स्थला का चुनाव, खान-पान, वस्त्रधारण, पयटन, तीज- त्याहार, खेल-कूद, सामुदायिक कायक्रम, स्वास्थ्य सबधा क्रियाकलाप, पशुपालन, यातायात क साधन आदि क अलावा जन्म-मृत्यु क निधारण म हान लगा ह । आज इसका क्षत्र इतना विस्तृत हो गया ह कि जावन का सुचारू रूप स चलाना हा ता मासम घटनाक्रम पर ध्यान रखना होगा ।

शाता उन्नाकृष्णन:प्रा.मासम कन्द्र विदभ क किसाना आर लागा का किस- किस प्रकार का सवाएँ उपलब्ध कराता है?

डॉ. पी.के.नंदनकर : कायालय विदभ क किसाना का मासम सबधा आकड़े उपलब्ध कराता है, जिसके आधार पर वे जलवायु सुनाश्चत कर सक, पारम्पारक फसला, आजारा, पशुओं, खाद, कीटनाशका आदि क समुचित उपयाग पर ध्यान दे सक । सबस महत्वपूण बात यह ह कि कायालय स कृषका का सवा क लिए वष 1932 म मुख्यालय का सहायता स पुण म एक विशिष्ट कृष मासम विज्ञान समाग का निमाण किया गया । वष 1945 म कृषका क लिए कृषक मासम बुलटन प्रणाला का शुरूवात कायालय द्वारा का गइ आर क्षत्र क कृषक समुदाय को कृष सवाए उपलब्ध करने क उद्श्य स वष 1987 म कृष मासम विज्ञान सलाहकार एकक का स्थापना का गइ । विदभ क किसाना क लिए प्रा.मौ.के.नागपुर म, भापाल म मध्यप्रदश क लिए तथा रायपुर म छत्तासगढ़ क लिए कृष मासम विज्ञान सलाहकार एकक का स्थापना का गइ । महाराष्ट्र, मध्यप्रदश तथा छत्तासगढ़ राज्य क कृष विद्यापाठ एव राज्य कृष विभाग क समन्वय स कृषका क लिए प्रत्यक मगलवार आर शुक्रवार का नियामत रूप स कृष मासम सलाहकार बुलटान जारा का जाता ह । विदभ क ग्यारह जिला (11), मध्यप्रदश क (50) जिला आर छत्तासगढ के (18) अठारह जिला का समावश करता ह । इन एकका द्वारा पाच दिवसाय मान्य विद्सिप्ताहिक जिलवार मासम पुवानुमान विदभ क तीन जलवायवा अनुक्षत्र, मध्यप्रदश क 9 जलवायवा अनुक्षत्र तथा छत्तासगढ़ क तीन कृष जलवायवा अनुक्षत्र का कृष पूवानुमान जारा का जाता ह जा इन एकका द्वारा विदभ क किसाना क लिए विद्सिप्ताहिक विद्भाषाय कृष मासम पूवानुमान, कृष बुलटन प्रत्यक मगलवार एव शुक्रवार का राज्य कृष विभाग क समन्वय स जारा का जाता ह । राज्य कृष विभाग कृषका का कृष स्थित आर कीटनाशका आर बीमारिया स उपचार एव रोकथाम क सदभ म भी जानकारा दता ह । कृष महाविद्यालय कृष मासम फील्ड एकक मासम सबधा कृष सलाह दता रहता ह यह बुलटान क्षत्र क कृषका एव एजासया को आकाशवाणी, दूरदशन, समाचार पत्र तथ इलेट्रानिक मिडीया द्वारा समय-समय पर प्रसारित की जाती है।

शांता उन्नीकृषणन : डॉ. पी.के.नंदनकर, जी कायोलय द्वारा जारी विविध पूवोनुमानो के सदभे मे कुछ बताएं?

डॉ. पी.के.नंदनकर : प्रा.मौ.के.नागपुर द्वारा अधीनस्थ वेधशालाओ के सतही व उपरितन मौसम के प्रेक्षित आकडो को यथा समय एकत्रीकरण कर प्रस्तुतीकरण एव चाटे- आभिलेखन द्वारा सदभित आकडो को 3 मुख्यालयो को यथा समय प्रेषित की जाती है । सतही एव उपरितन चाटे के आधार पर क्षेत्र के लिए मौसम सबधी इन्फ्रेन्स, मौसम रिपोटे, विभिन्न पूवोनुमान व चेतावनिया जारी कर आकाशवाणी, दूरदशेन सहित विभिन्न प्रचार माध्यमो द्वारा आम जनता मे प्रचारित की जाती है वैमानिक कार्यो के लिए हर आधे घण्टे के अतराल मे तात्कालिक मौसम रिपोटे जारी की जाती है । टमिनल एरोड्रम पूवोनुमान, उड़ान मागे पूवोनुमान, उड़ान क्षेत्र पूवोनुमान वचेतावनी जारी करना, विमान पायलटो को उड़ान - मागे के सभावित मौसम की जानकारी के साथ ही मौसम सबधी यथासभव सहायता प्रदान करना तथा गतव्य हवाई अड्डा की तात्कालिक मौसम टमिनल एरोड्रम पूवोनुमान व चेतावनिया आदि उपलब्ध कराता है । पूवोनुमानो मे निम्न उत्पाद का उपयोग किया जाता है । जैसे विभिन्न विश्लेषित उत्पाद जलवायुविक सारणी, अनुसंधान पत्रक,दैनिक/साप्ताहिक/ मासिक मौसम रिपोटे, सिनॉप्टिक चाटे, उपरितन वायु चाटे, 24 घटे मे परिवतेन का चाटे, न्यूमेरिकल वेदर पूवोनुमान एव सिनजी साफ्टवेयर के उत्पाद वाले चाटे आदि । भू-सतह, उपरितन वायु, रेडार उपग्रह आदि के प्रेक्षणो तथा मौसम पूवोनुमान के टर आधारित विभिन्न पूवोनुमान के विभिन्न माडलो के आधार पर विभिन्न पूवोनुमान जारी किया जाता है ।

शांता उन्नीकृष्णन : डॉ.नंदनकर, जी कायोलय द्वारा जारी पूवोनुमानो से किस-किस क्षेत्र के लोग लाभान्वित होते है?

डॉ. पी.के.नंदनकर : पूणे विदभे, छत्तीसगढ़ एव मध्यप्रदेश के लोग इससे लाभान्वित होते है । प्रादेशिक मौसम केन्द्र,नागपुर के अतेगत आनेवाले मौसम केन्द्र जैसे मौसम केन्द्र भोपाल तथा मौसम केन्द्र रायपुर के अतेगत आनेवाले विभिन्न जिलो के निवासी तथा कृषक इससे लाभान्वित होते है ।

शांता उन्नीकृष्णन : सर, कायोलय द्वारा पूवोनुमानो को आम जनता तक पहुँचाने के लिए किन तरीको को अपनाया जाता है जानना चाहूँगी ?

डॉ. पी.के.नंदनकर : देखिए पहले पूवोनुमान जारी करने के लिए रेडियो का सहारा लिया जाता था । लेकिन आजकल पूवोनुमान वेगता के साथ कई माध्यमो से जारी किया जाता है । पूवोनुमान जारी करने के लिए सैटलाइट एव रेडार द्वारा वस्तुस्थिति का विश्लेषण कर रेडियो, दूरदशेन, मोबाइल, इंटरनेट तथा समाचार पत्र आदि द्वारा आम जनता तक पूवोनुमान पहुँच जाती है । सपूणे देश एव विदेश के मौसम संबंधी जानकारी मिनटो मे इन माध्यमो द्वारा ज्ञात हो जाता है ।

शांता उन्नीकृष्णन : डॉ.नदनकर जानना चाहेगे की प्रा.मौ.के.नागपुर द्वारा किस-किस तरह के पूवोनुमान और चेतावनियाँ जारी की जाती है ?

डॉ. पी.के.नंदनकर : जी हाँ प्रा.मै.के.नागपुर मे शीत लहर, उष्ण लहर, चक्रवाती मानसूनी क्रियाकलाप, अतिवृष्टि क्षेत्र, वषो की तीव्रता आदि के पूवोनुमान व चेतावनी कायोलय द्वारा जारी की जाती है । कृषि, वैमानिक, पयेटन,खेलकूद,धामिक व साहसिक यात्राओ तथा अन्य बड़े आयोजनो के लिए तकनीकी पूवोनुमान जारी

किए जाते है । जिसमे सामान्य, दैनिक, साप्ताहिक, मासिक तथा वार्षिक मौसम रिपोर्ट व पूर्वानुमान जारी किया जाता है । साथ ही समय-समय पर विनाशकारी मौसम चेतावनिया भी जारी की जाती है अतिवृष्टि, अल्पवृष्टि, बाढ़, मेघ विस्फोट, ओला पात, लू, आंधी-तूफान, शीत-लहर चक्रवात व अन्य विनाशकारी मौसम घटनाओ के लिये पूर्व चेतावनियां जारी कर इसे प्रचार माध्यमो द्वारा प्रचारित किया जाता है । कृषि कार्य एव सभावित कृषि उत्पादन की मात्रा के आकलन मे तथा सिचा , प्राकृतिक बाढ़ नियत्रण एव जलाश्यो मे जल भडारण योजना आदि के लिए इन चेतावनियो का उपयोग किया जाता है ।

शांता उन्नीकृष्णन : सर, कुछ वर्ष पूर्व ही डॉपलर रेडार की स्थापना हुई है इससे कार्यालय की कार्यप्रणाली मे किस प्रकार की प्रगति हुई है और मौसमी पूर्वानुमानो मे यह कहाँ तक उपयोगी है ?

डॉ. पी.के.नंदनकर : देखिए डी.डब्ल्यु.आर. की स्थापना के कारण मौसम पूर्वानुमान और पल-पल के पूर्वानुमान को जारी करने मे सहायता मिलती है । डी.डब्ल्यु.आर. से प्राप्त आकडे का उपयोग भारी वर्षा, बर्फ बारी गर्जे के साथ तूफान, प्रचड अंधी तूफान आदि जैसी महत्वपूर्ण तत्वो का सटीक पूर्वानुमान देने मे यह एक उपयोगी उपकरण है । विड शियर आकडे पायलटो को लैंडीग के दौरान उपयोग मे लाने के ए डी.डब्ल्यु.आर. काफी उपयोगी होते है ।

शांता उन्नीकृषणन : डॉ.नदनकर कार्यालय द्वारा जारी पूर्वानुमानो को क्या आप सटीक मानते है ?

डॉ. पी.के.नंदनकर : (मुस्कुराते हुए) अत्याधुनिक तकनीको जैसे सैटलाइ , इटरनेट स्वचालित मौसम स्टेशनो (ए.डब्ल्यु.एस.), डी.डब्ल्यु.आर.एवं आस-पास के वेधशालाओं से उपलब्ध आकडो से पूर्वानुमान 90 से 100 प्रतिशत तक सही होते है ।

शांता उन्नीकृष्णन : सर, कार्यालय मे कार्यरत वैज्ञानिक द्वारा जारी मौसमी पूर्वानुमानो से हवाइ सेवाएँ कहाँ तक लाभान्वित होती है ?

डॉ. पी.के.नंदनकर : कार्यालय के वैज्ञानिको द्वारा जारी मौसमी पूर्वानुमान, हवाइ सेवाओ के लिए काफी उपयोगी होती है । जिसके बिना हवाइ उड़ान सभव नही है । अत: यह एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । कार्यालय द्वारा जारी ट्रेड पूर्वानुमा , क्षेत्र पूर्वानुमान, मार्ग पूर्वानुमान, एव मेटार के कारण सुरक्षित विमानन होता है और जिसकी सटीकता से हवाइ दुर्घटनाएँ कम होती है और जान माल सुरक्षित रहता है ।

शांता उन्नीकृष्णन : नदनकर जी प्रा.मौ.के.नागपुर के कार्यकलाप/ सेवाओ से क्या आप सतुष्ट है ?

डॉ पी.के.नंदनकर : बिल्कुल कार्यालय के वैज्ञानिक काफी अच्छा कार्य कर रहे है पूर्वानुमानो मे काफी सटीकता आ गइ है । आजकल के नवीनतम उपकरणो के सदर्भ मे वैज्ञानिको को प्रशिक्षण दिया जा रहा है जिससे पहले की अपेक्षा ड़ी सहजता एव तीव्रता से जनमानस तक पूर्वानुमान पहुँच पा रहा है । उ कि कार्यालय के लिए गर्व की बात है ।

'ऋतुरंग के सभी पाठकों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ '।

ये कैसी बातें करते हो ?

-आर.एन.यादव - स.मौ.वि.-II, प्रा.मौ. के.,नागपुर

आशियाने की बात करते हो,
दिल जलाने की बात करते हो ।।
प्यास से खुशक हो रहा है, गला,
मय पिलाने की बात करते हो ।।
दिल बता देता है, हकीकत सब,
फिजूल, आइना खाना की बात करते हो ।।
दिल टूटा, चकनाचूर हुआ,
किस दिल की बात करते हो ।।
चलती सासो का है, यकीं नहीं,
किस दिल की बात करते हो ।।
झूठ के साथ मे पलते रहे,
सच्चाइ से चिढ़ा करते हो ।।
दोषारोपण आंसा है बहुत,
जी चाहे जो, कह सकते हो ।।
दामन खुद का ही है,मैला,
किचड़ ये फेका करते हो ।।
एहसासे जुमे, करते है वहीं,
फौलादे दिल, जो रखते हो ।।
सच्चाई का है, इल्म नहीं,
बेकार की बाते करते हो ।।
वास्तविकता को तो अपनाओ,
ये कैसी बाते करते हो ।।

****

सटीक मौसम पूर्वानुमानों में आधुनिक तकनीकी का योगदान

-ए.वी.गोडे, स.मौ.वि.-I, प्रा.मौ. के.,नागपुर

एक समय था मानव समझ नही पाता था कि मौसम परिवर्तन कैसे और क्यो होता है । प्राकृतिक आपदाओ को वह दैविक आपदाये समझा जाता था क्योंकि वह नही जानता था कि यह आपदाये कैसे निर्मित होती है? उनका उद्गम स्थान कहाँ है और वे कैसी बनती है ? यह समझना मानव के लिए टेढ़ा और पेचिदा मामला था । वह सिर्फ उनके परिणामो को देख सकता था । उनसे होने वाली भयकर तबाही का वह मूक दर्शक बना रहता और स्वय तथा अपनो को पहुँचने वाली क्षति से दुखी होता रहता था । कई सदियो तक मौसम से उत्पन्न होनेवाली आपदाओ से वह पीडित रहा । मगर कहते है कि जरूरत हर खोज की जननी होती है और विज्ञान के विकास के साथ इन रहस्यो की परते धीरे-धीरे खुलने लगी । इतनी विशाल पृथ्वी पर होनेवाली मौसमी परिवर्तनो पर ध्यान रखना असंभव और मानव की क्षमता के प था । पृथ्वी के वातावरण मे सूर्य से प्राप्त हानेवाली उर्जा (उष्मा) और पृथ्वी भ्रमण के कारण भौतिक बदलाव होते रहते है । यह मौसम परिवर्तन की प्रमुख वजह है । यह वह चक्र है जो पृथ्वी को जीवन भी प्रदान करता है और पृथ्वी को जीवित ग्रह बनाये रखता है ।

हवा कि गति और दिशा मे परिवर्तन, वातावरण के तापमान मे आनेवाले बदलाव इत्यादि पर नजर रखना और मौसमी प्रेक्षणो को मौसम वेधशालाओ मे निश्चित समय पर राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केद्र पर उपलब्ध करना एक जटील कार्य है । जितना बड़ा भू-भाग उतनी ही अधिक यह समस्या विकराल है । इस समस्र का समाधान अत्याधुनिक मौसम वेधशालाओ और कारगर द्रुतगामी सचार प्रणाली के सिवाय असभव सा प्रतित होता है साथ ही यह प्रणालीय हर मौसम मे व्यवस्थित कार्यरत रहे यह भी देखा जाना था । आज के युग मे उन्नत विज्ञान एव प्रोद्योगिकी ने इसे वास्तविकता मे लाया है । अत्याधुनिक मौसम से सबंधित विविध उपकरणो तथा उन्नत संचार प्रणालियो से मौसम का पूर्वानुमान सटिकता से लगाना सभव हो पाया है । यह अत्र धुनिक उपकरण सचार प्रणालिय और मॉडल निम्नानुसार है ।

1.स्वचालित मौसम स्टेशन

2.स्वचालित वर्षामापी

3.जीपीएस रेडियो सौंदे

4.रेडार

5.उपग्रह प्रणाली

6.एच पी सी एस (HPCS)(उच्च निष्पादन परिपथ तत्रो (सख्यात्मकमौसम प्रागुक्ति,सख्यात्मक प्रति)

7.एम.एफ.आई (MFI) (सिनजी तत्र)

8.जागतिक पूर्वानुमान तत्र (GPS)

9.मल्टी मॉडल एनसेम्बल्ड एक स्टेडेड रेज फोरकास्ट

10.इन्टीग्रेटड एग्रोमेटीओरॉलाजिकल एडवाइजर सिस्टम एट डिस्ट्रीक्ट लेवल

स्वचालित मौसम स्टेशन - मौसम के सटीक पूर्वानुमान लगाने के लिए हमे मौसमी प्रेक्षणो कि लगातार समयबध्द आवश्यकता होती है । लेकिन आर्थिक दृष्टिकोण मनुष्य बल का अभाव तथा स्थानो की दुर्गमता मौसम वेधशालाओ का बहुत घना (50 कि.मी.) जाल बिछा पाना और लगातार मौसमी प्रेक्षणो को प्राप्त कर उसका सग्रहण क विश्लेषण करना सभव नही है । सटीक मौसम पूर्वानुमान के लिए जिसकी नितात जरूरत है । इस समस्या का समाधान मानव रहीत स्वचालित मौसम स्टेशन बनाकर किया गया । आज स्वचालित मौसम स्टेशनो का एक घना जाल बिछाया जा चुका है । उपग्रह प्रणाली द्वारा इन स्टेशनो से निश्चित समयावधि के प्रेक्षण प्राप्त कर उसे कम्प्युटर प्रणाली द्वारा विश्लेषण करके मौसम के पूर्वानुमान मे उपयोग किया जा रहा है । इनका उपयोग विभिन्न मौसम पूर्वानुमान के सगणकृत मॉडलो को चलाने मे भी किया जाता है ।

स्वचालित वर्षामापी :- मौसम का पूर्वानुमान काफि लबे समय से किया जाता रहा है । लेकिन उसकी सटिकता की जाँच पड़ताल कर पाना ज्यादा कारगर नही था । क्योकि जितने अधिक आकड़े होगे उतना ही प्रतिशत भी बढ़े वर्षामापी यत्रो की सीमित सख्या की वजह से वर्षा के आकड़े भी सीमित सख्या मे ही प्राप्त हुआ करते थे । और तो और यह भी एक सच है कि जहाँ वर्षामापी लगी हो वही वर्षा होगी ऐसा सभव नही है । लेकिन आज के युग मे स्वय चालित वर्षामापी द्वारा एक घना जाल बीछा पाना सभव हुआ है । उसके द्वारा वर्षा के सही आकड़े प्राप्त होते है । यह कृषि जल आपदा प्रबधन जैसे क्षेत्रो मे उपयोगी है ।

जीपीएस रेडियो सौंदे :- मौसम पूर्वानुमान करने के लिए कई प्रकार के मौसमी प्राचलो कि जरूरत होती है । जैसे हवा का दाब, तापमान आद्रता मेघो कि मात्रा और प्रकार, हवाओ की दिशा और गति इत्यादि । इनमे से कई प्राचलो की सतही जानकारी सतह प्रेक्षणो द्वारा प्राप्त होती है । वैसे ही सतह के उपर निश्चित अतराल पर हवा कि गति और दिशा तथा आद्र व तापमान के निरीक्ष (आंकड़ो) की जरूरत होती है । जिसे हम उपरितन वायु प्रेक्षण भी कहते है । इसके लिए एक अत्य धुनिक और विश्वसनीय तत्र की जरूरत थी । आज देश मे जीपीएस रेडियो सौंदे उपकरणो का जाल उपलब्ध है और उसके द्वारा उपरोक्त आवश्यकता कि पूर्ति हो रही है । उपलब्ध आंकड़ो के अध्ययन और विश्लेषण से हमे उपरि वायुमडलीय चक्रवात और प्रतिचक्रवात की जानकारी मिलती है । उपरि चक्रवात बिगड़े मौसम के तरफ तो प्रति चक्र फेयर (अच्छे) मौसम की ओर अनुक्रम मे सकेत करता है । इसे सिनॉप्टिक पूर्वानुमान तत्र भी कहते है ।

रेडार :- सभी मौसमी रेडारो द्वारा रेडियो तरगो को एंटेना द्वारा भेजा और जैसे वर्षा या पानी की बूँदे, बर्फ की बूँदे (कण), धूल के कण के लिए और वायुमडल मे स्थित कणो द्वारा प्रकीर्ण तरगो को प्राप्त कर कम्प्युटर कि मदद से चित्र मे बदलकर वर्षण के स्थान और तीव्रता की जानकारी मिलती है ।

सटीक मौसम पूर्वानुमान लगाने के लिए एक सश प्रणाली की (तत्र) जरूरत थी । इस दिशा मे सर्वप्रथम सी.डी.आर स्टेशनो का जाल देश के सीमावर्ती भागो मे स्थापित किया गया । रेडार प्रणाली द्वारा समुद्र मे आनेवाले तूफानो (चक्रवात व अन्य तत्र) कि जानकारी समय रहते प्राप्त होने लगी इस प्रणाली को उपग्रह प्रणाली के साथ जोड़ने से चक्रवात की जनन प्रक्रि , चक्रवात पथ और प्रतिवक्र चक्रवात का अनुमान लगाना सभव हो गया है । सभी अवदाब, गहरा अवदाब, चक्रवात प्र , चक्रवात का जनन स्थान सागर या समुद्र है । भारत मे बगाल की खाड़ी और अरब सागर मुख्यत: इनका जनन स्थान है । इन सभी तत्रो का बारीकी से अध्ययन करके पूर्वानुमान करना एक जटिल कार्य है । इसके लिए लगातार मौसम प्रेक्षणो कि आवश्यकता होती है । यह कार्य जटिल इसलिए

है क्योंकि मौसम वेदशालाएँ समुद्र पर स्थापित नही की जा सकती है । बिना मौसम प्रेक्षणो के मौसम विज्ञानीयो को इन तत्रो का अध्ययन और मौसम का पूर्वानुमान करना कठिन था ।

रेडारो का सबसे उन्नत और अत्याधुनिक प्रारूप डॉपलर वेदर रेडार (डी.डब्ल्यु.आर) है । आज देश मे डॉपलर मौसमी रेडार का जाल पूरे देश मे बिछाया जा रहा है । इन रेडारो की त्रिज्या दूरी या निगरानी क्षमता लगभग 250 से 500 कि.मी. के बीच मे है । इस प्रणाली द्वारा हमे गजेना वाले मेघ और गजे के साथ छोटे देनेवाले बादलो के स्थान, मात्रा और उनके सतही के उंचाइ का पता चलता है । साथ मे दिशा और गति का भी । इस उपकरण के उपयोग से मध्य मापक्रम और तत्काल तथा भारी वर्षो के पूर्वानुमान के बारे मे सटीक जानकारी उपलब्ध की जा सकती है । यह ओलावृष्टि की भी जानकारी दे सकता है ।

उपग्रह प्रणाली :- भू स्थिर उपग्रह की गति पृथ्वी के गति के समतुल्य होती है । और इस कारण यह उपग्रह अपनी कक्षा मे एक स्थान पर दिखाइ देता रहता है । इसमे बैठाए गए ट्रॅस पॉडोसे द्वारा विद्युत - चुबकीय तरगे पृथ्वी पर भेजी जाती है । और यह तरगे जब वातावरण मे स्थित पानी की बूँदे , बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़े, धूल के कणो से व अन्य वस्तुओ से टकराते है आरेर लौटकर उपग्रह द्वारा पुन: प्राप्त किये जाते है । प्राप्त तरगो को पृथ्वी पर स्थित आँकड़े केन्द्रो पर भेजकर कम्प्युटर के द्वारा चित्रो मे परिवर्तित किए जाते है ।

भू स्थिर उपग्रह प्रणाली आज मौसम पूर्वानुमान मे रीढ़ की हड्डी साबित हो रही है । बिना उपग्रह प्रणाली के मौसम का अध्ययन और पूर्वानुमान बहुत कठिन है । उपग्रह प्रणाली कइ दिशाओ मे काम करती है । यह एक विश्वसनीय, सभी मौसम मे, प्रभावशाली सचार माध्यम के रूप मे काम करती है , जैसे की स्वय चालित वर्षा-मापियो को जोडकर सपूर्ण मौसमी आकड़े, मौसम विश्लेषण केद्र पर समय पर उपलब्ध कराता है । सिनॉप्टिक तत्र के अध्ययन से, मौसम विज्ञानियो द्वारा कइ ः पित मौसमी तत्रो के आधार पर पूर्वानुमान किया जाता है , जैसे कि द्रोणी, सायसर, मध्य क्षोभमडलीय चक्रवात (एमटीसी), पश्चिमी विक्षोभ और पवन असातष्ः इत्यादि लेकिन उपग्रह प्रणाली के मदद से इसके साथ मेघ जमाव, मेघराशि, भिन्न-भिन्न प्रकार के मेघ, उनकी दिशा और गति तथा वातावरण मे वाष्प की मात्रा और परिसचरण लगातार मिलती रहती उच्च विभेदन चित्र सचरण (एम.आर.पी.टी.) द्वारा बादलो के प्रकार, मात्रा और किसी स्थान से उसकी दूरी का सही अनुमान लगाया जा सकता है । इस प्रणाली द्वारा देश मे कुहरे की स्थिति के बारे मे सटिक जानकारी का पता लगाया जा सकता है । विमानन और सतही परिवहन मे कुहरा बाधाएँ उत्पन्न करता है ।(रेलवे और अन्य यातायात के साधन इत्यादि)

उच्च निष्पादन परिकलन प्रणाली (एच.पी.सी.एस.) इस तत्र का उपयोग करके जागतिक पूर्वानुमान तत्र जी.पी.एस.) 35 कि.मी. तक विभेदन कर सात दिनो तक के मौसम पूर्वानुमान का विश्लेषण कर सकते है । इस कार्य के लिए 00 और 12 सर्वाधिक समन्वयित समय (यु.टी.सी.) प्रेक्षणो (सतही और उपरितन) का उपयोग किया जाता है । स्थानिय प्रादेशिक मौसम केन्द्रो मे कइ जगह 09 और 27 किलोमीटर का विभेदन करके 24 और 48 घटो के लिए मौसमी प्राचलो की सटीक जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है । मौसम अनुसधान और पूर्वानुमान तत्र का उपयोग करके क्षेत्रीय मध्य मापक्रम मौसम के बारे मे अध्ययन करके मौसम का सही पूर्वानुमान करने मे मदद पहुँचाती है । देश के मौसम विज्ञान विभाग द्व - 2010 से चरम अधिकतम और न्यूनतम तापमान के सबध मे दो सप्ताह तक के लबे अतराल के लिए भविष्ः वाणी की जा रही है । रह देश के लिए काफी उपयोगी है । मध्यम मापक्रम मॉडेल और डॉपलर मौसमी रेडार के उपयोग से आज महानगरो के लिये तत्काल मौसम पूर्वानुमान किया जा सकता

है । इसका एक उपयोग जागतिक तथा राष्ट्रीय क्रिड़ा स्पधोओ मे और अन्य जगह होता है और यह आंकिर पूवोनुमान काफी कारगर सिध्द हो रहा है ।

एम.एफ.आई. (मिटीओ फ्रांस इंटरनेशनल (सिनर्जी) प्रणाली :- इसमे भिन्न-भिन्न मौसमी प्राचलो का उपयोग करके मॉडल बनाए और चलाए जाते है । यह एक नवीन तथा अत्याधुनिक तकनिक है । इसे मौसम मॉडल युग की सज्ञा दे सकते है । इन मॉडलो को चलाने के लिए काफी बड़े भू-भाग पर केंद्रित मौसमी वेधशालाओ से मौसम प्रेक्षणो और प्राचलो की आवश्यकता है । यह हमे रेडार और उपग्रह और अन्य आधुनिक सचार प्रणाली द्वारा प्राप्त होते है। आज देश के मौसम विज्ञान विभाग मे कइ तत्र आए है जो एक आधुनिकीकरण का भाग है । इसमे सबसे कारगर और दुलेभ है एम.एफ.आइ । इसमे कइ प्रकार के मॉडल और मौसम प्राचलो कि जानकारी मौसम विज्ञानी को एक साथ और अपने जगह (कक्ष मे) पर उपलब्ध होती है । जैसे उपरितन चक्रवात और प्रति चक्र त एक निश्चित भू-भाग पर स्थिति, आनेवाले समय मे उसमे होनेवाले परिवतेन कि सभव कइ मॉडलो पर उपलब्ध होती है । साथ मे बादलो कि स्थिति के वतेमान तथा पुराने चित्र और वाष्प कि मात्रा का अवलोकन किया जा सकता है । इन मॉडलो का जायजा लेकर और पारपरिक मौसम पूवोनुमान तकनिक का उपयोग करके क्षेत्रीय, मध्य मापक्रम और तत्काल पूवोनुमान के बारे मे जानकारी उपलब्ध करा सकते है । आनेवाले समय मे कइ प्रकार के मॉडलो का उपयोग करके वषा, तापमान, कोहरा इत्यादी मौसमी प्राचलो की दो, तीन, दिन, एक सप्ताह, एक मास और साल तथा एक से लेकर पाँच साल तक की सटिक पूवोनुमान की भविष्यवाणी कर सकते है । इन सब मे जागतिक पूवोनुमान तत्र तथा मल्टी मॉडल एसेबल्ड एकस्टेडड रेज फोरकास्ट को काफी योगदान है ।

इंटीग्रेटेड एग्रो मिटीओरॉलजिकल एडवायजरी सिस्टम एट डिस्ट्रिक्ट लेवल :- भारत कृषि प्रदान देश है लगभग 60 % लोगो की आबादी कृषि पर निर्भर है । किसानो का मौसम जलवायु के प्रति ज्ञान बढ़ाने के लिए जिला स्तर पर एक कृषि परामशे की आवश्यकता है । देश के प्रत्येक राज्य मे, प्रादेशिक मौसम केन्द्रके अतेगत एक कृषि परामशे इकाइ स्थापित की गइ है । जो उसके अतेगत आनेवाले किसानोको मौसम प्राचलो की जानकारी (फसल पूणे और पश्चात) देता रहता है । जो काफी फायदे मद सिध्द हो रही है और किसान तथा देश के उपज मे काफी बढ़ोतरी हो गइ है । आज किसान की आवश्यकता अनुसार पाच दिन का कृषि मौसम पूवोनुमान राज्यो मे किया जा रहा है भारत मौसम विज्ञान विभाग मौसम पूवोनुमान के अलावा भूकम्प का भी अध्ययन करता है । आज हमे भूकम्प आने तथा उनके संवेदनशील,एव अति सवेदनशील क्षेत्रो का पता चल चुका है । गहरे समुद्र मे जब दो टेकटॉनिक प्लेटस उध्वोधर तरीके से एक दूसरे से टकराते है तब सुनामी आती है । आज हम यथाशीघ्र कहाँ भूकम्प का केद्र स्थित है और उसकी तीव्रता, रेक्टर स्केल पर परिणाम और टकराव किस तरह का हुआ इसकी तुरत जानकारी मिल जाती है । और हम सुनामी की अग्रिम चेतावनी दे सकते है । आज अत्याधुनिक उपकरणो और कम्प्युटर प्रणाली द्वारा यह सभव हुआ है । भूकम्प और मौसम की हलचल आगे पीछे साथ-साथ होते देखा गया है ।

आज देश मे उन्नत भूकम्प मापन प्रणालीया जैसे बी.बी.एम. और जी.एस.एम. नया वी-सैट आधारित डीजीटल सिसमिक टेली मैट्री प्रणालियाँ उपलब्ध है । भूकम्प आने से हम रोक नही सकते लेकिन अध्ययन और अनुमान लगाकर मानव का बचाव जरूर कर सकते है । जैसे जैसे सचार और मौसमी उपकरणो की खोज होती गइ मॉडल का उपयोग दिनो दिन बढ़ता जा रहा है । इससे पूवोनुमान करने की तकनिक मे सुधार और आधुनिकता आ रही है । आज जागतिक मौसम विज्ञानी अपने कौशल,प्रयास, अनुभव और तके से इन अत्याधुनिक तकनिको का उपयोग

कर मौसम पूवानुमानो की सटीकता बढ़ा रहे है । इससे यह प्रतीत होता है की कब '' मौसम पूवानुमान'' शब्द हटकर मौसम की जानकारी और फिर मौसम की निश्चित जानकारी जैसे शब्दो का प्रयोग किया जाएगा

****

"अपनी भूलों को स्वीकारना उस झाड़ू के समान है जो गंदगी को साफ कर उस स्थान को पहले से अधिक साफ कर देती है।"

- महात्मा गांधी

देश की सफाई

-जी.एम.शहारे, वै.स. प्रा.मौ. के.,नागपुर

गांधी जयंती आई, मोदी सरकार ने स्वच्छता अभियान चलाई ,
दो दिन घर, दफ्तर, गली - मोहल्ले मे स्वच्छता से रौनक आई ।
बापू ने कहा था देश की करो सफाई, पर अपनो ने कर दी तिजोरी की सफाई,
विदेशी बैंको मे पल - बढ़ रही, भारत की गाढ़ी कमाई,
पर लुटने वाले समझ रहे उसे, अपने बाप-दादा की कमाई ।

बापू ने कहा था इसलिए तुम कर रहे हो देश मे सफाई,
अपना परिसर हमेशा साफ रखे, इतना सोचने की बुध्दी भी तूने नही पाई
मोदी जी ने झाडू पकडा, तब हमे शर्म आई,
फिर हमने झाडू पकडकर परिसर की कर दी सफाई ,
दो अक्तूबर 14 रोजी सौ घंटे सफाई करने की कसम खायी,
आज कई दिन बीत गए, झाडू पकड़ने की कभी याद भी नही आई ।

''अभियान'' तो अभियान होता है, कुछ करने के लिए मन मे होना सच्चाई,
इसलिए हमको करना है अपने दिल और दिमाग की सफाई,
तभी बच सकती है देश की सपत्ति जो भारतवासियो की करेगी भलाई ।
कई सरकारे आई, गाधी जी की याद जरूर दिलाई
देश मे सफाई तो हुई नही, देश का सफाया करके चली गई ।
बात हो रही गगा सफाई की, सफाई तो अभी हुई नही,
दो सौ करोड़ देखकर - गदगी फिर से दिल मे उछल कर आई ।

मोदी जी की बात है - न खाऊँगा - न खाने दूँगा,
यह बात कितने नेताओ को रास आई
देश की स्वच्छता चाहते हो तो, पहले करो अपने मन - मैल की सफाई,
अगर वादे पूरे कर पाये, तो दुनिया मे होगी वाहवाई,
जीवन सुख-समृध्दी का मिला, तो सारे भारत वासी करेगे सरकार की दुहाई ।

****

जोस इवान का ‘जलवास’-एक सत्य कथा

--डी.एस.गायकवाड,स.मौ.वि-I, प्रा.मौ.के,नागपुर

चित्र :‘जोस इवान’ सोलह महिनों तक पँसिफिक महासागर में गुमशुदा होने के बाद एबॉन द्विप के किनारे पाया गया।

धरती पर मानव प्राणि एक अद्भूत एव सबसे अनोखा है। मानव के साहस-सहनशीलता व जिद्दी स्वभाव की अनेक कहानियाँ हमने सुनी है । ऐसी कथाओ को फिल्माया भी गया । दस-बारह वर्ष पूर्व ‘राबर्ट झेमेकिस’ निर्देशित ‘कास्टवे’नामक फिल्म प्रदर्शित हुई थी । इस फिल्म को ‘ॲकेडेमी अवार्ड्स’ भी नवाजा गया था । इस फिल्म का नायक (टॉम हॅक्स) हवाई जहाज के दूर्घटना के बाद एक निर्जन द्वीप पर भारी सघर्ष के बाद पहुँचता है । उसके साथ ‘हेलन हंट’ नामक रूप सुदरी भी होती है । उसी तरह ‘लाईफ ऑफ पाय’ फिल्म का नायक भी बाघ ,बकरीयो के साथ बोट मे सफर करता हुआ एक मानव विरहित द्वीप मे पहुँचता है । परतु यह सब काल्पित कथाएँ है ।

इस लेख मे बयाँ किए गई ‘जोस इवान’ की कहानी वास्तव मे घटी रोमाचक सत्यकथा है । इस कथा मे इवान की मानसिकता, शारिरिक एव भावनिक क्षमता कसौटी पर खरी उतरी है । प्रकृति मे अगिनत जीव पैदा होते हमने देखे है । परतु इन सब मे ‘मनुष्य प्राणी’ कुछ और ही है । लिजिए पढिए-

हमे ज्ञात है ‘पाडवोका वनवास’ और उनका अज्ञातवास’ । ‘जोस इवान’ नाम के स्पॅनिश युवक ने भी हाल ही मे एक नही दो नही पूरे सोलह मास का जलवास भूगता है । कथा कुछ ऐसी है- **जोस इवान और उसका दोस्त** सागर सफर पर निकले थे । उनकी ‘फायबर ग्लास’ की चोबीस फुट की बोट (इजीन विरहित) समुदर मे भटक गयी । इस सफर मे इवान के मित्र की :खद मौत हुई । तत्पश्चात इवान अकेले ही पॅसिफिक महासागर मे सोलह महिने तक भटकता रहा । समुद्री जीव जैसे कछुए,पक्षी,मछलियाँ आदि का उपयोग उसने अन्न के तौर पर किया । इकट्ठा किये हुए बारिश के पानी से वह अपनी तृष्णा मिटाता रहा । यह बारिश का पानी खत्म होते ही उसे प्यास मिटाने का यक्ष-प्रश्न पड़ता था, उस वक्त इवान ‘कछुएं’ के खून से अपनी तृष्णा मिटाता था । क्यो की सागर का खारा पानी स्वास्थ्य के लिए अपायकारक होता है ।

जब इवान के ठिकाने का पता चला तब उसके बोट मे केवल एक 'कछुआ' पाया गया । कछुए, मछलियाँ, पछी पकड़ने हेतु वो हाथ का ही इस्तेमाल करता था । जब वो पाया गया तब उसके शरीर पर केवल एक अतेवस्त्र के अलावा कुछ भी नही था । उसकी दाढी रस्सी कि तरह लबी बढ़ी थी, जैसे पछीयो का घोसला हो । अत मे लगभग तेरह हजार किलोमीटर भटकने के बाद इवान की बोट मेक्सिको से तेरह हजार किलोमीटर दूरी पर पॉसीफिक महासागर के इबॉन नामक एक प्रवाल (ये द्वीप प्राणियो के अवशेषो से बनते है) द्वीप के खड़ी मे फसी मिली । उसकी बोट कई जगह क्षतिग्रस्त हुई थी । उस पर कई खरोचे पाये गये । बोट मे स्थापित **'ओला जेल्ड्स्टँड'** (मानव वंश संशोधक) इवान से सपके बनाने की कोशिश कर रहा था । परतु इवान को स्पॉनेश भाषा के अलावा अन्य भाषा का ज्ञान नही था तथा ओला जेल्ड्स्टॅड केवल अग्रेजी ही जानता था । किंतु हावभाव तथा चित्र के माध्यम से इवान से संवाद होता रहा । इवान इतने दीघे सफर से बहुत थक चुका है । उसका शरीर कृश हो चुका है । उसे निम्न रक्तचाप की तकलीफ हो रही है । उसके घुटनो मे काफी दर्द हो रहा है , यद्यपी वह चल नही सकता है ।

पॉसीफिक महासागर मे **'मार्शल आयलंड्स'** यह एक छोटे-बड़े बाइस प्रवाल द्वीपो का समुह है । इन द्वीपो की जनसख्या करीब करीब साठ हजार की है । इनमे **'इबॉन'** द्वीप की बस्ती करीबन एक हजार की है । यह द्वीप समुद्र सतह से लगभग दो मीटर ऊंचा है ।

जोस इवान फिलहाल 'इबॉन द्वीप' के मेयर के मेजबानी का लुफ्त उठा रहा है । उसे भरपुर पोषक आहार के साथ शुध्द पानी मुहय्या कराया जा रहा है । इवान को वैद्यकिय सेवा हेतु वहाँ से स्थानातरित करने के प्रयास जारी है । किन्तु द्वीप मे केवल एक ही हवाई जहाज उपलब्ध है । वो भी फिलहाल बिगड़ने के कारण सेवा नही दे पा रहा है। इसलिये इवान को वहाँ से ले जाने के लिये विशेष जहाज की योजना बनायी जा रही है ।

महासागर मे अपनी दिशा से भटकने की कई सत्य-कथाए है । किन्तु जोस इवान की ये कहानी अपने-आप मे निश्चित ही अनोखी तथा रोमाचकारी है । अपने हमसफर (मित्र) की राह मे मौत होते हुए भी इवान ने जिस कदर धैये से सोलह महिने तक एकला-चलो रे का परिचय दिया तथा मौत को परास्त किया - शायद ये पिछले दो-तीन सदी की सबसे सनसनीखेज तथा रोमाचकारी कहानी होगी ।

****

"हमेशा आगे बढ़ते रहने और विश्वास करने से कठिनाई दूर हो जाती है और दिखाई देने वाली असंभवता नष्ट हो जाती है।„

-जेरिमी कोलियर

माँ

- *एम.आर.कान्हालकर, वै.स., प्रा.मौ. के.,नागपुर*

स्वयवर मे मिलती है पत्नी, पुण्य कर्मों से मिलती है माता ।
स्वयवर मे लाई पत्नी के खातिर तूने छोड़ दी अपनी माता।।
पेट मे तुझे पालकर नौ महीने जिसने वहन किया भार ।
शादी के नौ दिन मे भूल गया माता का आभार ।।

अरे ! जब तू रोता था छोड़ हाथ के काम वो तूझे चुप कराती ।
उठाकर गोदी मे, लगाकर छाती से वो तूझे दूध पिलाती ।।
देख खिला तेरा चेहरा वह गद् गद् होती । फिर.....
थपथपाकर तुझे सुलाती और अपने काम मे जुट जाती ।।

अरे ! जिसके आँचल को तूने गिला किय, भूखी रहकर तूझे खिलाया
जिसकी उगली पकड़ तू चलना सीखा, खुद रोकर तूझे हँसाया ।।
तेरे सुखो के खातिर हजार दुखो को गले लगाया ।
बड़ा होकर, शादी कर, उसी माँ को तूने दुत्कार दिया ।

कर द्रावित उसका मन, छोड़कर उसके पावित्र चरण
दिल उसका तोड़कर, मन उसका मरोड़कर ।।
कर अपनी मनमानी आज दिख रहा उसके आँखो मे पानी
मूखे तेरे भी जीवन मे घट सकती है ये कमे कहानी ।।

क्या कामयाब होगा तू ? क्यो करता झूठी पूजा - आराधना ।
क्या सफल होगा तेरा जीवन ? छोड़ ये झूठी तप - साधना ।।
क्यो पूवेजो को करता तपेण क्यो ईश्वर को करता श्रीफल अपेण ।
देख अपने कर्मों का दपेण, कर उसके चरणो मे समेपण ।।

जिसने तुझे दिए सस्कार, क्या माना तुमने उसका आभार
पिया तुमने जिसका दूध, सोचो क्या सही सिला दिया तुमने खुद ।
खा कसम की,सदैव रहेगा उसका ऋणी, होकर उसका उत्तरदायी
क्या चुका पाएगा ये ऋण, मातृसेवा जैसा पुण्य नही

उसके जीवन के सधीकाल मे तू दे माँ का साथ ।
तेरे सधीकाल मे काम आएगा उसका बहुमूल्य आशीवाद ।।
उसकी अधेरी रातो को तू बन उजाली का किरण ।
चार मास बढ़ेगी ज्यादा उसकी जीने की उमग ।।

मत भूल माँ को, माँ के उपकारों को ।
ईश्वर के भी परे है जननी, स्वर्ग है उसके चरणो मे
मत भूल माँ को, माँ के उपकारों को ।
हो नतमस्तक माँ के चरणो मे,
हो नतमस्तक माँ के चरणों में ।

****

पृथ्वी पर बढ़ता पर्यावरण असंतुलन एवं प्रभाव

-आर.डी.मेश्राम, स.मौ.वि.-I, प्रा.मौ. के.,नागपुर

गुजरात सरकार द्वारा राज्य मे पयेटन को बढ़ावा देने के लिए वषे 2011-12 को पयेटन वषे के रूप मे मनाया गया है । देश विदेश के पयेटको को राज्य भ्रमण हेतु आकषेित करने के लिए राज्य सरकार ने हिदी फिल्म के महानायक अमिताभ बच्चन को ब्राड एम्बेसेडर बनाया । अमिताभ जी दूरदशेन के हर चैन मे गुजरात की सास्कृतिक,धामिक, ऐतिहासिक एव प्राकृतिक विशेषताओ का बखान करते हुए पयेटको को गुजरात दशेन के लिए आमत्रित किया । जहाँ तक सास्कृतिक, धामिक एव ऐतिहासिक विशेषताओ की बात है, निश्चित ही गुजरात भारत का एक गौरवशाली राज्य है । लेकिन अमिताभ जी द्वारा गुजरात के प्राकृतिक सौदये के दशेन हेतु सारे विश्व के लोगो को आमत्रित करने का अतिविशिष्ट महत्वपूणे कारण था गुजरात के गिर के वनो मे एशियाई शेरो के दशेन । यह जानकर आशचये होगा कि गिर के वन इस दुनिया मे एशियाई शेरो की एकमात्र बस्ती है तथा यहाँ वषे 2010 मे हुई गणना के अनुसार 411 (चार सौ ग्यारह) शेर पाए गए थे । यह गुजरात सरकार के लिए निश्चित ही गवे की बात हो सकती है, लेकिन सारे विश्व के लिए यह एक चिता का विषय है । जगल का राजा कहलाने वाला य प्राणी, जिसकी दहाड़ सारे एशिया के जगलो मे गुंजती थी, अब केवल गिर के वन की शोभा मात्र रह गया है । जगल के सबसे ताकतवर प्राणी की रह दयनीय स्थिति निश्चित ही जीव-सृष्टि के प्राणियो पर आने वाले खतरे की ओर इशारा करती है । हमारे जीव-सृष्टि के प्राणी पृथ्वी के पयोवरण सतुलन का एक महत्वपूणे हिस्सा है । अत: इनका विलुप्त होना पयोवरण के सतुलन को प्रभावित करता है ।

हमारे पृथ्वी का पयोवरण मुख्य रूप से तीन घटको पर निभेर करता है, वे है जल,थल एव वायु । पृथ्वी पर तीनो घटको की उपलब्धता की मात्रा निश्चित है तथा इनकी भौतिक एव रासायनिक परिभाषा की निश्चित पयोवरण के सतुलन के लिए जरूरी है । पृथ्वी पर जीव-सृष्टि का अस्तित्व पयोवरण के इन्ही निश्चित परिमाणो के कारण बना हुआ है । पृथ्वी पर जीव-सृष्टि एव वनस्पति का विकास केवल उस निधारित भूभाग पर ही सभव है जहाँ जल, थल एवं वायु संयुक्त रूप से उपलब्ध हो । ये जीव एव वनस्पतियाँ आपस मे एक निश्चित प्रणाली के अतेगत जीवनयापन करते है जिसे परिस्थिति की प्रणाली (इकोलॉजी) कहा जाता है । जैसे ही इस प्रणाली मे किसी एक घटक की सख्या बहुत बड़ी मात्रा मे घटती या बढ़ती है, वैसे ही परिस्थितियो मे असतुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिससे परिस्थिति की प्रणाली के अन्य घटक प्रभावित होने लगते है और पयोवरण का सतुलन बिगड़ने लगता है ।

पृथ्वी पर समस्त जीव-प्राणी तथा वनस्पतियाँ सतुलन को बनाए रखने के लिए जिस नियम का पालन करते है वह है प्राकृतिक सह जीवन का नियम । अथात् यहाँ विद्यमान छोटी से छोटी चीटी जैसा जीव एव नन्ही से नन्ही हरी धास जैसे वनस्पति प्रकृति के सतुलन के लिए उतनी ही महत्वपूणे है जितने बड़े जीव -प्राणी एव वृक्ष । पृथ्वी के पयोवरण के लिए ये प्राणी और वनस्पतियाँ किस प्रकार काये करती है, इसे जानना जरूरी है । हमारे पृथ्वी के समस्त प्राणी जगत के लिए भोजन की जिम्मेदारी का काये हमारे पेड़-पौधो पर है । हमारे पेड़-पौधो पर है । हमारे पेड़-पौधो मे ही एकमात्र यह योग्यता है कि वे सूये की उजा को पत्तो मे स्थित हरितलवको की मदद से भोजन

तैयार करने के साथ-साथ मे पेड़ प्राणवायु के रूप मे समस्तजीव सृष्टि को ऑक्सिजन (O2) देता है , साथ ही वायु मे उपस्थित काबेन-डाई-आक्साइड (CO2) जैसी जहरीली गैसो का अवशोषण कर वायु ड़ल को स्वस्थ रखते है । अथोत पेड़ हमारे जीव-सृष्टि की सबसे महत्वपूणे कड़ी है । अत: समस्त जीव-प्राणियो के अस्तित्व के लिए वनस्पतियो का होना जरूरी है । पृथ्वी के पयोवरण को सतुलित बनाए रखने मे यह मददगार है दूसरी महत्वपूणे कड़ी है हमारे जीव-सृष्टी के समस्त प्राणी समुदाय । इन प्राणियो की मुख्यत: दो प्रजातिय है । वे प्राणी जो भोजन हेतु केवल पेड़-पौधो पर निभेर रहते है, शाकाहारी प्राणी कहलाते है तथा जो प्राणी इन शाकाहारी प्राणियो का मास भोजन के रूप मे ग्रहण करते है, मासाहारी कहलाते है । हमारी सृष्टि के निमोण की परिकल्पना यथाथे स्वरूप शायद ही ले पाती यदि यहाँ समस्त जीव केवल शाकाहारी होते या फिर केवल मासाहरी । पृथ्वी पर समस्त जीवो एव वनस्पतियो के सह अस्तित्व की परिकल्पना ही इस भव्य पृथ्वीलोक के निमोण की नीव है ।

जैसा कि हम जान चुके है कि पारिस्थितिकीय सतुलन एव पयोवरण की रक्षा के लिए हमारे जीव-सृष्टि के समस्त जीवो एव वनस्पतियो का यथावत बने रहना त आवश्यक है । क्या आज हमारी धरती प पारिस्थितिकीय सतुलन पूणेत: कायम है ? क्या हमारा पयोवरण आज पूणेत: सुरक्षित है ? क्या हमारे सौर-ग्रह का एकमात्र सिरमौर ग्रह पृथ्वी का अस्तित्व पूणेत: सुरक्षित है ? यदि आज के परिप्रेक्ष्य मे इन सवालो के जवाब ढूँढा जाए तो उत्तर नकारात्मक ही होगे । पृथ्वी पर पारिस्थितिकिय सतुलन बिगड़ रहा है जिसके कारण पृथ्वी के पयोवरण पर बुरा प्रभाव ड़ रहा है । पयोवरण के सतुलन को बनाए रखने के लिए जिस जीवसृष्टि का निमोण हुआ है, आज उसी जीव सृष्टि के प्राणियो का जीवनयापन कठिन हो गया है । पृ पर ऐसी अनेक विषम परिस्थितियाँ निमोण हो गई है जिनके कारण प्राणी जगत के अनेक जीवो का जीवन सकटमय स्थिति मे है तथा वे विलुप्ति के कगार मे है । सयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दी पयोवरण आकलन 2005 के अनुसार पृथ्वी को प्राणवान रखने वाले घटक गड़बड़ा गए है । जिसके कारण 30% मछलियाँ, 25% सपे, 12% पक्षी एव 24% स्तनधारी जीवो की सख्या मे कमी हुई है । भारत की 10% जैव सपदा भी खत्म होने के कगार मे है । इटरनेशनल यूनियन ऑफ कजरवेशन ऑफ नेचर एण्ड नेचुरल रिसोसेस के अनुसार 16,306 जीव-जन्तु और वनस्पतियाँ लुप्त होने के कगार पर है । इतनी बड़ी सख्या मे जीव-जन्तु और वनस्पतियो का लुप्त होना पयोवरण की सुरक्षा के लिए निश्चित ही चिता का कारण है । पयोवरण की सुरक्षा हेतु हमारे प्राणी जगत का सुरक्षित रहना कितना जरूरी है तथा इनके विलुप्त होने पर हमारे पयोवरण को क्या नुकसान हो सकता है, इन पर विचार करना अत्यत जरूरी है ।

जैसा की हम जानते है कि शेर जगल का राजा है तथा शेर सुरक्षित याने जगल सुरक्षित । अथोत् दोनो का सुरक्षित होना जीव-सृष्टि के लिए बहुत जरूरी है । लेकिन आज इस शक्तिशाली प्राणी का एव उसके परिवार का जीवन सकट मे है । सपूणे एशिया मे शेरो का परिवार भारत के गुजरात के गिर मे ही पाया गया है । भारत मे बाघो की बात करे तो 2001-02 मे की गई गणना के अनुसार बाघो की कुल सख्या 3,642 थी, वही 2006-07 मे राष्ट्रीय बाघ सरक्षण प्राधिकरण (एन.टी.सी.ए) एव वाइल्ड लाइफ इंस्टिटूयट ऑफ इंडिया (डब्ल्यु.आय.आय) के अनुसार बाघो की सख्या 1700 से भी कम आकी गई है । शेर एव बाघो का इस प्रकार तेजी से विलुप्त होना जगल की सुरक्षा के लिए बहुत ड़ा खतरा है । पृथ्वी पर जगल ही ऐसे स्थान है जहाँ विभिन्न प्रजातियो की वनस्पतिक सपदा एव प्राणियो का जीवन सुरक्षित है । शेरो और बाघो के विलुप्त होने से जगलो की सुरक्षा खतरे मे है । शेरो की सुरक्षा कवच मे विचरण करने वाले प्राणी जैसे हिरण, हाथी, गेडे आदि प्राणी निर्भिक शिकारियो का शिकार हो रहे है, जिनसे इनकी सख्या भी निरतर घटती जा रही है । अत: सपूणे वन सपदा की सुरक्षा हेतु बाघो एव शेरो का

सुरक्षित रहना जरूरी है । , जो हमारे पयोवरण के ऑक्सिजन एव काबेन-डाइ-ऑक्साइड की मात्रा को सतुलित रखता है, जिसकी रक्षा हेतु इन प्राणियो का जीवित रहना जरूरी है । आजकल कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए मानव द्वारा रसायनो का अधाधुद प्रयोग किया जा रहा है । भूमि की उवेरा शक्ति बढ़ाने के लिए जहाँ रसायनिक खादो का प्रयोग हो रहा है वही फसलो पर ड़ो के प्रभाव को कम करने के लिए विषैले रासायनिक औषधियो का छिड़काव किया जा रहा है । कृषि के क्षेत्र मे रासायनो के बढ़ने प्रयोग के अनेक दुष्परिणाम सामने आए है । रासायनिक उवेरको से भूमी की प्राकृतिक उवेरा शक्ति क्षीण होती जा रही है , वही विषैले कीटनाशक हमारे अनाजो और फल सब्जियो द्वारा हमारे भोजन मे शामिल हो रहे है । यह हमारे पाचन तत्र को कमजोर बना रही है तथा अनेक छोटी बड़ी बीमारियो का कारण बन रही है । खेतो मे प्रयोग हो रहे रसायन बरसात के पानी के साथ मिलकर हमारे जलस्रोतो को विषैला कर रहा है । इस प्रकार जल को प्रदुषित कर ये रसायन हमारे पयोवरण को नुकसान पहुँचा रहे है । किसानो द्वारा अत्यधिक रसायनो के प्रयोग के कारण अनेक छोटे ड़े प्राणी विलुप्त होते जा रहे है जिन्हे किसानो का मित्र कहा जाता है । केचुआ एक ऐसा छोटा प्राणी है जो किसान का हल कहलाता है । यह भूमी को प्राकृतिक रूप से उजोवान बनाने मे सहायक है । भूमि की मिट्टी मे अनेक नन्हे-नन्हे जीवाणु होते है जो वायु मे उपलब्ध नाइट्रोजन को शोषित कर फसलो को नाइट्रोजन प्रदान करती है ।अत्यधिक रासायनिक खादो के प्रयोग के कारण ये नन्हे जीवाणु भी निष्क्रिय होते जा रहे है । खेतो मे चूहो के ताडव को नियंत्रित करने का काम सपे समुदाय आसानी से करता है । चूहो को खाकर साप चूहो की गतिविधियो पर नियत्रण रखता है । जहाँ तक खेतो मे कीडो के प्रभाव की बा है, इन पर नियत्रण हेतु प्रकृति मे अनेक छोटे बड़े पक्षियो के समुह है जो इन कीड़ो को खाकर अपना जीवन यापन करते है । इस प्रकार बिना विषैले रसायनो के प्रयोग से सपूर्ण कृषि उत्पादन पयोवरण को विषाक्त किए बिना प्राकृतिक रूप से आसानी से सचालित की जा सकती है । आज कृषक मित्र कहलाने वाले मे प्राणी समुह भी विलुप्ति का दश झेल रहे है । चिडिया (गौरैया), कौए, उल्लू इत्यादि पक्षी लगभग खत्म होते जा रहे है । इनकी घटती सख्या के कारण किसानो को फसलो की रक्षा के लिए महगे एव विषैले रसायनो का प्रयोग हेतु बाध्य होना पड़ता है। जिस कारण भूमि की उवेरा शक्ति का ह्रास हो रहा है । वही हमारे स्वच्छ जल स्रोत विषैले रसायनो के प्रभाव से दूषित होते जा रहे है। जो हमारे पयोवरण के लिए खतरा बनते जा रहे है आजकल प्राय: शहरो मे तथा गाँव के आसपास मृत जानवरो के शरीर पड़े दिखाई देते है । ये मृत जानवरो के शरीर यथावत पड़े रहने से दुर्गंध फैलती रहती है । ये रोगानुओ के पनपने और फैलाने मे सहायक होती है । मृत जानवरो के शरीर का समयानुसार निपटान न होने के कारण यह हवा मे दुर्गंध एव रोगानुओ को फैलाते रहते है , जिस कारण से हमारा पयोपरण दूषित होता है । मृत प्राणियो के शरीर की सुरक्षित निपटान के लिए हमे सृष्टि ने सफाई कमेचारी के रूप मे गिद्ध पक्षियो की सेना दी है । गिद्ध पक्षियो की टोली मृत जानवरो के शरीर को देखते ही उन पर टूट पड़ती है और उनका मांस खाकर उनसे फैलनेवाले दुर्गंध एव रोगानुओ की सभावनाओ को खत्म कर देती है।इस प्रकार ये गिद्ध मृत जानवरो के शरीर से होने वाले सभावित पयोवरणीय प्रदूषण को रोकने मे बहुत कारगर सिद्ध हुए है । लेकिन आज इन बहुपयोगी पक्षियो की सख्या भी नगण्य हो गई है । जिसके कारण लावारिस पड़े मृत जानवरो का सुरक्षित निपटान मुश्किल हो गया है तथा यहाँ-वहाँ पड़े मृत जानवरो के सड़ते शरीर हमारे पयोवरण को प्रदूषित कर रही है ।

पृथ्वी से विलुप्त हो रहे प्राणियो के कारण जहाँ पयोवरण को भारी नुकसान हो रहा है वही हमारा प्राकृतिक सौदये भी खोता जा रहा है । चिडियो का चहचहान , कौवो की काँव-काँव, मोरो का थिरकना हिरणो की छलाग एव

जगल मे शेर की दहाड़ भी विलुप्त हो जाएगी । इसके साथ ही हमारा प्राकृतिक सगीत की मधुरता खो जाएगी । मानव प्राणी के जीवन मे खुशियो के पल भरने वाला यह प्राकृतिक संसार सूना-सूना हो जाएगा ।

हमारी जीव-सृष्टि के विलुप्त होने से दुलेभ जीव-प्राणी जहाँ अपनी अतिम सास तक पृथ्वी के पयोवरण की रक्षा के लिए कृत सकल्पित , वही मानव जाति का प्राणी, जो स्वय को सवेश्रेष्ठ एव सवेशक्तिमान कहलाता है, जीव सृष्टि के मित्र रूपी प्राणियो के लिए खतरा बनता जा रहा है । आधुनिकता एव विकास की पट्टी को आखो मे बाँधे यह मानव प्राणी अपने ही जीव- सृष्टि को नुकसान पहँचा रहा है । जिसे यह भी पता नही की वह जिस डाली पर बैठा है उसी पर कुल्हाड़ी चला रहा है । छोटी से छोटी उपभोग की वस ओ के निमोण के लिए जहर उगलती बड़ी-बड़ी फैक्टरियो का निमोण किया जा रहा है । इन फैक्टरियो को चलाने के लिए कोयला एव पेट्रोलियम जैसे इधनो का प्रयोग होता है । वतेमान समय मे प्रति वषे लगभग चार अरब टन जीवाष्म इधन जलाए जा रहे है जो हमारे पयोवरण मे चार प्रतिशत काबेन-डाई-ऑक्साइड की मात्रा को बढ़ा रहा है । औद्योगिक विकास हेतु प्रतिवषे लगभग 7 करोड़ हेक्टेयर भूमि से वनो का सफाया हो रहा है । वृक्षो के विनाश द्वारा प्रतिवषे दो अरब टन अतिरिक्त काबेन डाइ-ऑक्साइड गैस वायुमडल मे आ जाती है । इस कार वनो के विनाश से ग्रीन हाउस प्रभाव को ढ़ावा मिल रहा है जो कि ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या का प्रमुख कारण है । अ : मानव प्राणी द्वारा जारी निरतर प्राकृतिक ससाधनो के दोहन एव वनो के विनाश के कारण पयोवरण को भारी नुकसान पहँच रहा है । यदि पृथ्वी की वनस्पतिक सपदा एव अन्य जीवो के साथ खिलव ड़ होता रहा तो सभव है सपूणे विश्व विनाश के कगार पर होगा ।

आज सपूणे मानव जाति के लिए यह चिता का विषय है कि किस प्रकार पयोवरण मे बढ़ ते प्रदूषण के प्रभाव को कम किया जा सके । आज अतरोष्ट्रीय स्तर पर पयोवरण पर बढ़ते प्रभाव को कम करने एव इससे उत न्न ग्लोबल वार्मिंग जैसे खतरो को कम करने के उपायो पर चचो जारी है । पयोवरण सरक्षण की दिशा मे पहला कदम सन 1972 मे स्टाकहोम सम्मेलन के तहत उठाया गया । इस सम्मेलन के बाद भारत मे 'प्रोजेक्ट टाइगर' चलाने का निणेय लिया गया था । 30 अप्रैल से 4 मई 2007 मे थाइलैण्ड की राजधानी बैंकाक मे सपन्न जलवायु परिवतेन सम्मेलन मे वैज्ञानिको ने सहमति व्यक्त की है कि पृथ्वी के बढ़ते तापमान एव जलवायु परिवतेन से मानव समेत सभी जीव-जन्तुओ और वनस्पतियो के अस्तित्व मे आए सकट को टालने के लिए अगले 50 वषों मे ग्रीन हाउस गैसो के उत्सजेन मे 85% तक की भारी कटौती करनी होगी । भारत सरकार ने भी पयोवरण पर बढ़ते प्रदूषण के प्रभाव को कम करने के लिए अनेक उपाय अ है । कारखानो एव खानो मे प्रदूषण को रोकने के लिए उपायो पर औद्योगिक विष विज्ञान सस्थान (लखनऊ) तथा राष्ट्रीय सस्थान, अहमदाबाद मे अनुसधान काये गभीरता पूवेक किया जा रहा है । भारत का सविधान भी अपने सभी नागरिको को पृथ्वी के समस्त जीव प्राणियो एव वन सपदा की सुरक्षा के लिए जागरूक कर है । भारत के सविधान के अनुच्छेद 51 ए के अतेगत उल्लेखित नागरिको के दस मौलिक अधिकारो मे (VII) के अनुसार 'प्राकृतिक पयोवरण' की जिसके अतेगत वन, झील, नदी और वन्य जीव है, की रक्षा करे और उसका सवधेन करे तथा प्राणी मात्र के प्रति दया भाव रखे । अथोत हमे अपने पयोवरण को सुरक्षित एव स्वच्छ बनाए रखना है तो निश्चित ही अपने वन, जन एवं जीव-जन्तुओ की सुरक्षा करनी होगी । हमे अपने पारिस्थितिकीय सतुलन को बनाए रखना है तो हमे अपने वनो को कटने से बचाना होगा, विलुप्त होते हमारे प्राणी जगत के प्राणियो का पुन: उत्थान करना होगा, और हमारी जलस्रोत को निमेल एव स्वच्छ बनाए रखना होगा । हमारा प्राणी जगत हमारे जीव-सृष्टि की एक अत्यत महत्वपूणे कड़ी है । यदि ये कड़ी कमजोर हो

जाए तो हमारा पयोवरण का सतुलन बिगड़ जाएगा । अत: हमे इसे कमजोर नही होने देना है तथा इनके सरक्षण के लिए हर सभव प्रयास करना होगा । हमे अपने विश्व को 'सुजलाम, सुफलाम, मलयज शीतलाम बनाना है तो हमे समस्त प्राणी जगत एव वनस्पतियो की रक्षा करनी होगी । इनकी सुरक्षा ही हमारे पयोवरण की सुरक्षा है और हमारे पृथ्वी के जीवन की भी ।

****

"कर्म को स्वार्थ से परमार्थ की ओर ले जाना ही मुक्ति है। कर्म का त्याग मुक्ति नहीं है।"

- रवींद्रनाथ ठाकुर

"जब आप कुछ गंवा बैठते हैं, तो उससे प्राप्त शिक्षा को न गंवाएं।"

-दलाई लामा

जीवन सफल बनाने की कुंजी

-संजय बिदयांता ,वै.स,प्रा.मौ.के.नागपुर

कई घटनाओ या सलाह ने जो मेरे जीवन को बदल दिया और यह बदलाव अच्छे के लिए था । यहाँ मैं इतना दावे के साथ कह सकता हुँ कि यदि किसी ने ऐसे गुण आत्मसात कर लिये हो और उनका सक्ती से पालन करे, यह निश्चित रूप से एक उनके भी जीवन के लिए भी फके का कारण बन सकता है । कुछ घटनाओ का मैं यह परिगणन करना चाहता हु ।

समय के प्रबंधन पर:-

मेरे जीवन के शुरूवात मे ही मुझे बताया गया था कि हमेशा बचते रहे कहने से "मेरे पास समय नही है" , मेरे परामशेदाता द्वारा (माता पिता) । समय प्राथमिकता का मामला है। यदि आप सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ एक काम करना आवश्यक समझते है , एव प्रोत्साहन पुरस्कार के साथ तो समय ना होने का सवाल ही पैदा नही होता।

सुनने पर:

एक अच्छे नेता होने के लिए आपको एक अच्छा श्रोता होना की जरूरत है। एक अच्छा श्रोता होने का मतलब है आप एक अच्छे शिक्षार्थी है , लोग हमेशा आपको सुना जाना पसद नही करते । यदि आप एक अच्छे श्रोता है तब आप अन्य लोगो की समस्याओ को अच्छा समाधान की पेशकश करने मे सक्षम होगे ।

आवृत्ति मिलान:

कई बार ऐसा होता है स्वाभाविक रूप से आप अनजान लोगो के साथ भी जुड जाते है , परंतु कई बार काफी मनाने के बाद भी आप न तो उन्हे सतुष्ट और न ही उन लोगो के साथ जुड़ पाते है । यह मन मे गाँठ बाध लिजिए कि बजाय अपनी ऊजो अनुत्साही लोगो के लिए बबोद न कर अपनी ऊजो खचे करे उन लोगो के लिए जो लोग आप के साथ कठिन समय मे खड़ा होना पसद करेगे । अपने आलोचको और वे लोगो से दूर रहे जो निराशावादी है । यदि आपके साथी आशावादी लोग है आपको इसका लाभ जरूर होगा।

<u>हतोत्साहित न हों:</u> कभी कभी आपको कुछ काये के उपक्रम के लिए हतोत्साहित किया जाएगा मैने व्यक्तिगत तौर पर पाया है कि यदि आप अपने काये पर जोशीले है , तब जीवन मे आप सफल जरूर होगे | उदाहरण के तौर पर, मैं अपने शैक्षिक जीवन के दौरान विज्ञान स्ट्रीम पढ़ने के लिए हतोत्साहित किया गया था, लेकिन आज मैं आश्वस्त हूँ कि सफलता प्राप्त करने के लिए अपने सपनो का पालन करना आनेवाये है ।

<u>योगदान दें:</u> जब से, मैने अपने होश हासिल कर ली , मैं हर काये मे अपना छोटा से छोट योगदान देने मे बहुत बड़ा सुख प्राप्त किया है | लोग हमेशा ही आपके प्रयोज्य होनेवाली कला की सराहना करेगे |

मज़ा लें: हर छोटे काम करने के लिए , आपने इतना आनद लेने चाहिए ताकि परिणाम सकारात्मक रहे | आप पाएगे कि अपने जीवन के बेहद उदास भाग मे भी अगर मजा डाल दिजीएगा तो आपका अपना जीवन को बदलते देख सकते है।

तर्क करना: तके से आप दुनिया को जीत नही सकते । बेहतर यह अहै कि भारतीय पद्ध्ती की गाधीगीरी को अपनाए । किसी के तके करने पर प्यार बाटे, फूल दे और आपके सारे रुके हुए काम मे सफलता पाए ।

दोषी ठहराना :अपनी असफलता के लिए आप दूसरे को जिम्मेदार न ठहराए । सफलता का स्वाद चखने के लिये हम खुद ही जिम्मेदार है, किस्मत का बिगड़ना या न बिगड़ना हमारे स्वय के हाथो है, न किसी और के ।

आपका नजरीया :यदि आप का दुनिया को देखने के नजरीये मे प्यार, मोहब्बत और दया का भाव शामिल है, तो निश्चित ही आपकी राह आसान होगी । यह दुनिया आपकी बड़ी गलती भी माफ करने को तैयार होगी ।

घमंड : यदि स्वप्न के पीछे भागते आप सफल हो गये तो एहतियात बरते कि सफलता आपके सर चढ़ कर ना बोले । यदि आपकी जीत से आप अति अभिमान महसूस कर रहे हो और आपके चरित्र पर फके दिखने लगे , तब यही घमड आपको ले डुबेगी । अपने अति सुख और पराये के अति दुखके समय जो अपने कतेव्य को भूल जाये वही घमड आपके विफलता का भी कारण बन सकती है ।

गुस्सा : थूक दे जल्द से जल्द, यह आपके सारे सबध को बिगाड़ने का कोई कसर नही छोड़ती और समय हाथ से निकलने पर ही, यह महसूस होगा के आप विफलता के सीढ़ी पर है । यदि गुस्सा आता भी है तो तुरत प्रतिक्रिया ना करे, समय निकलने पर माहौल अपने आप शात हो जाएगा ।

अटलता : जब तक आपको किसी प्रश्न का उत्तर प्राप्त ना हो जाता है , कोशिश करते रहिये , सफलता आपके हाथ जरूर चुमेगी । बचपन मे ही हमारे इतिहास के अध्यापिका ने जो ज्ञान दिया के कब, कहां , क्यो और कैसे यदि अपने जीवन मे आत्मसात कर ले, निश्चित ही जीवन मे आपके बदलाव आयेगा । मैने अनुकरण किया और लाभावित हुआ , आप भी प्रयोग करे । अटलता से जुड़े आज के चलन वाले वाक्य है " लगे रहो मुन्नाभाइ " ।

उत्तेजित होना: उतना ही करोए जितने की दरकार है, यदि आप सोचते है कि बहुत ज्यादा मेहनत करने पर आपका परिणाम भी बहुत सर्वश्रेष्ठ होगा , तब आपकी सोच गलत है ।

पुराने दोस्त : पुराने दोस्त आपके जरूरत पड़ने पर काम आ सकते है, याद रखिये कि आपकी अपनी शक्सियत को तरो ताजा बनाने मे बे मददगार होगे जो आपके सफलता का कारण बन सकते है ।

अच्छी रात की नींद : दिन भर काम करने के पश्चात यदि रात की नींद बाधित न ः , तब जीवन मे भी विफलताए आप से कोसो दूर होगे । अनुसधान द्वारा भी यह बात सिद्ध हो चुकी है ।

दर्द : यदि आप किसी के ताने मारने से दुखी है, तो उस दर्द को ना छिपाए और न इस धारना मे जीए कि सब ठीक हो जाएगा । दर्द को भरोसेमद व्यक्ति से बाटे , निश्चित ही समाधान मिलेगा और जीव आपका सुखमय होगा ।

प्रेरणा : आप स्वय ही खुद के प्रेरक है । यदि आप स्वय के काम से सतुष्ट नही है तथा दूसरे व्यक्ति की स्तुती पर निर्भर नही रहते तब आप स्वय के ही खुद के प्रशसक और आलोचक भी होगे । यह जीवन जीने का औ सफल बनने का सबसे बड़ा कारण ।

प्यार : यदि प्यार की भाषा या दो बोल का इस्तेमाल करे, आपके विफल होने की गुजाइश खत्म

व्यवहार : याद रखिये के लोग आपके व्यवहार को बड़े गौर से देखते है , आप जिस तरह सोचते, कहते या लोगो को मदद करने को तत्पर हो तो निश्चित ही यही व्यवहार आपके पास लौट कर आएगा । आजमाइये ।

मौन धारण कीजीए : जरूरत पडने पर दो से चार घंटे का मौन धारण किजीए, फर्क पड़ेगा , मानसिक शाती मिलेगा, रुके हुए चक्के दौड़ पडेगे । यह चुनौती है , स्वीकार किजीए , मजा जरूर आयेगा ।

Say "NO" sometimes and not "YES" always : इच्छा के विरु "**हां** " बोलकर पछताने से बेहतर है , कभी कभी आप **" ना "** बोलने मे सकोच ना करे । आप हर वक्त , हर व्यक्ति को खुश नही कर सकते । यदि ना बोलने पर कोई नुकसान ना हो तो यह नुस्का जरूर अजमाएं ।

अफ़वाह : किसी भी व्यक्ति के बारे मे आलोचना ना करे, इस तरीके के हरकत से आप अगले व्यक्ति के बदनामी करने मे शामिल है । एक उगली उधर और चार उगली अपनी ओर से आप चूक नही सकते । ऐसे व्यवहार से बचे, खुश रहेगे , सफल होगे ।

सभी से सीखें और सभी में बांटे : दुनिया मे हर व्यक्ति भिन्न होता है , दूसरो से अच्छे गुण अर्जित करे चाहे वह छोटा हो या बड़ा , साथ ही अपने ज्ञान की भी इच्छुक व्यक्तियो मे बाटे । लाभ मिलेगा ,जीवन मे रगत आएगी ।

धारणा : पहले से ही अपनी राय बनाने से, आप सिक्के के एक ही पहलू को देखते है , हो सकता है कि सिक्के का दूसरा पहलू एकदम ही भिन्न हो । इसलिए प्रश्न पूछिये और अपनी धारणाए बदलिए , धारणाओ से आप सामान्य सबध स्थापित करने मे असमथ होगे और जीवन को रगीन बनाने से चूकेगे ।

माता पिता. बिन माता पिता के आपका अस्तित्व कहा ? इसलिए उनका सम्मान कीजीए , आपको सम्मान की प्राप्ति अवश्य होगी , जीवन सफल होगा ।

****

नागपुर वेधशाला में दर्ज की गई मानसून ऋतु -2015 की विशेष मौसमी घटनाएँ

-एस.एस.अंबरते, वै.स., प्रा.मौ.के.नागपुर

उच्चतम अधिकतम तापमान - दिनांक 01.06.15 - 46.5° सें. ।

निम्नतम न्यूनतम तापमान - दिनांक 26.09.15 - 19.9° सें. ।

उच्चतम वर्षा के आंकड़े 24 घंटे के दौरान - दिनांक 22.06.15 - 113.2 मि.मी. ।

उच्चतम पवन गति 24 घंटे के दौरान - दिनांक 02.06.15 - 70 कि.मी. प्रति घंटे ।

उच्चतम औसत वायु गति (24 घंटे में) - दिनांक 17.09.15 से 18.09.15(भा.मा.स.-08.30 बजे से 08.30 तक) -18 कि.मी.प्रति घंटे ।

कुल मेघाछादित दिवस - 21 दिन ।

गर्ज के साथ तूफान के कुल दिन - 47 दिन ।

वर्षा के कुल दिन - 38 दिन (वर्षा 2.5 मि.मी.) ।

कुहरा आच्छादित कुल दिवस - 03 दिन ।

दृश्यता वाले कुल दिन - 17 दिन (≤800 मी.) ।

भारी वर्षा वाले कुल दिन - 05 दिन ।

आपदादायक मौसम के कुल दिन - 06 दिन ।

****

पृथ्वी की विरासत है बेटियाँ

- डॉ. गुरूदत्त मिश्रा, स.मौ.वि.-II,मौ.के.भोपाल

करता हूँ नमन उस श्रम त्याग लग्न को ।
जो उनको मिला प्रकृति से, जिसकी हकदार है बेटियाँ
वो बेटियो का प्यार, जो माँ बाप को मिला ।
जब मिलता नही दे प्यार, तो याद आये बेटियाँ ।।
घर को सजाया बेटियो ने, कितनी लगन से ।
हो घर का बंटाधार, तो याद आये बेटियाँ
जब तक थी इस घर मे, तो किया श्रम बहुत अटूट ।
ससुराल मे भी श्रम करे सुकुमार बेटियाँ ।।
हो जाये घर से बिदा, तो याद आये बेटियाँ ।
बेटे करे जब घर से जुदा, जो राद आये बेटियाँ ।
जब तक थी घर मे बेटियाँ, ये घर रहा उजियारा
अब सूना-सूना लग रहा, याद आये बेटियाँ ।।
जीवन का सफर कठिन है, और राते काँटो से भरी ।
जीवन भर साथ निभाती दमदार बेटियाँ ।
मिलता था इस देश मे, बेटो को सम्मान ।
मेहनत लगन से पा लिया, बेटियो ने स्थान ।।
पढ़ लिखकर हुई बेटियाँ डाक्टर, इजीनियर पास ।
लड़के आवारा हुए, खोदेगे अब घास ।।
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, ये सब की पुकार ।
करता हूँ नमन उस श्रम त्याग लगन को ।
जो उनको मिला प्रकृति से जिसकी हकदार है बेटियाँ ।।
वो बेटियो का प्यार, जो माँ बाप को मिला ।
जब मिलता नही दे प्यार, तो याद आये बेटियाँ ।।
घर को सजाया बेटियो ने, कितनी लगन से ।
हो घर का बंटाधार, तो याद बाये बेटियाँ
जब तक थी इस घर मे, तो किया श्रम बहुत अटूट ।
ससुराल मे भी श्रम करे सुकुमार बेटियाँ ।।
हो जाये घर से बिदा तो याद आये बेटियाँ ।

बेटे करे जब घर से जुदा, तो याद आये बेटियाँ ।
जब तक थी घर मे बेटियाँ, ये घर रहा उजियारा
अब सूना-सूना लग रहा, याद आये बेटियाँ ।।
जीवन का सफर कठिन है, और राते काँटो से भरी ।
जीवन भर साथ निभाती दमदार बेटीयाँ ।।
मिलता था इस देश मे, बेटो को सम्मान ।
मेहनत लगन से पा लिया, बेटीयो ने सम्मान ।।
पढ़ लिखकर हुई बेटियाँ डॉक्टर, इजीनियर पास ।
लड़के आवारा हुए, खोदेगे अब घास ।।
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, ये सब की पुकार
बेटीयाँ पृथ्वी की विरासत है और परिवार की है आधार ।।

****

“किसी भी काम को खूबसूरती से करने के लिए मनुष्य को उसे स्वयं करना चाहिए।„

-नेपोलियन

साहित्य एवं कथा साहित्य: नये युग का सूत्रधार

-अपूर्वा सिहराल, वै.स. , मौ.के.भोपाल

साहित्य जीवन का आधार है। साहित्य, मानव ज्ञान की नीव और मानव अनुभव का सुरक्षित विवरण भी है । खुद लैटिन से उपजा शब्द " litteratura , " जिसका शाब्दिक अर्थ है लेखन , व्याकरण और सीखना । आमतौर पर रचनात्मक कार्यों के साथ जुड़ा है , साथ ही सभी विषयो , देशो और संस्कृतियो के लेखन सम्मिलित है। सदियो से , साहित्य अभिजात वर्ग के लिये आरक्षित माना गया , केवल शिक्षित लोगो के एक विशेष वर्ग के लिए समझ-बूझ और आनंद के माध्यम के रूप मे उपलब्ध । जैसे कि मार्क्स द्वारा काफी अच्छी तरह अंकित किया गया - साहित्य, खासकर मजदूर वर्ग के लिए नही है, क्योंकि - जो श्रमिक वर्ग शारीरिक काम मे संलग्न है , गहरी साहित्यिक अध्ययन मे तल्लीन होने के लिए या तो समय या संसाधन पास नही है । उनकी पहली और सबसे बड़ी चिंता उनके पेट भरना है। उनके पास यह 'समृधि' नही है की वे एक गर्म चाय के प्याले के साथ आग के पास बैठे और घन्टो तक पढ़े और साहित्यिक प्रतिभा का आत्मनिरीक्षण करे।

यह एक ऐसी यात्रा है जो पृष्ठो पर अंकित है और पाठक की कल्पना द्वारा चालित है । यह मानव त्रासदियो से लेकर प्यार के लिए कभी लोकप्रिय खोज के किस्से जैसे कई विषयो के लिए जोर देता है । यह शारीरिक रूप से शब्दो मे लिखा जाता है, इन शब्दो को मन की कल्पना से जिन्दा करते है, और पाठ की जटिलता या सादगी को सम्मिलित करने की क्षमता। साहित्य लोगो को दूसरो के नज़रिये से देखने के लिए सक्षम बनता है और कभी कभी निर्जीव वस्तुओ को भी; इसलिए, यह जीवन को देखने का दर्पण बन जाता है । अत मे, साहित्य पाठक को जीवन के अनुभवो के बारे मे एक प्रवेश द्वार प्रदान करता है जिससे सबसे दुखद कहानियो भी सबसे खुशहाल लोगो के दिल को छू जाती है।

जबकि,कथा, एक जरूरत है । यह एक 'अधिक लोकप्रिय ' शैली है । इसके लिये यह जरूरी नही की किसी उच्च डिग्री का ज्ञान हो । कथा साहित्य वह है जो शायद जीवन मे रंग भरता है- कथा साहित्य मे, आप एक के बाद एक अपनी पसंद को उड़ान दे सकते है , और उन्हे पुरा होते देख सकते है । यह परी- तृप्ति और सतुष्टि का एक अनूठा तरीका है । कोई भी आसानी से काल्पनिक विचारो से खुद को जुड़ सकता है और काफी आराम से उन्हे समझ भी सकता है । इसके अलावा, वे आसानी से उपलब्ध है और विश्वास करने योग्य है - पुस्तकालयो मे अनेक घटे खर्चे करने की जरूरत नही है । कथा वास्तव मे जीवन मे एक जरूरत - जब कोई जीवन के अनगिनत परीक्षणो और उतार-चढाओं के असल अनुभवो से परेशान हो, तब संतुलन बनाए रखने के लिए काल्पनिक दुनिया मे गोता लगाने की जरूरत है- जीवन मे क्या मिला बनाम जीवन से क्या कामना की थी के बीच संतुलन । कथा कल्पनाओ पर यकीन दिलाना है । अगर एक कहानी सच है, तो यह गैर-काल्पनिक है । अगर इसे बनाया है, यह कथा है । उपन्यास कथा साहित्य है । परी कथाये कथा साहित्य है। अखबारो मे लेख कथा नही है (यहां तक कि अगर वे "सच को तिरछा लिखते है," तब भी उसे तथ्यात्मक रूप मे पढ़ा जाता है) । वैसे ही विश्वकोश लेख, जीवनी, और संस्मरण है ।

कथा साहित्य मानसिक संतुलन और जीवन की पवित्रता को बनाए रखने मे मदद करता है । उदाहरण के लिए, हम प्रसिद्ध लेखक पर विचार करे - जे के राउलिंग। राउलिंग एक एकल, बेरोजगार माँ थी जो, राज्य पेंशन पर

निभेर थी । वह जब लदन मे एक मेट्रो ट्रेन मे यात्रा कर रही थी तब उन्हे हैरी पॉटर श्रृखला के लिए विचार आया। उन्होने रोजमरो की जिदगी की कठिनाइयो के बावजूद, अपनी कल्पना को उड़ान के लिये प दे दिए और अभी तक की सबसे प्रसिद्ध उपन्यास श्रृखला लिखी । अगर वे अपने विलक्षण मन के गहरे क मे गहन शोध नही करतीं, लाखो बच्चो मे पढ़ने की आदत आत्मसात कभी नही होती और वह खुद भी एक दुखी इंसान बन जातीं । इस प्रकार, कथा साहित्य ने उन्हे अपने हर-तरफ छाई हुई परेशानियो के समुद्र से तैर कर बहार निकलने मे मदद की ।

साहित्य एक खास तरह के बौद्धिक झुकाव और अनुसरण को मानता है । यह आम जनता के लिए नही है । जनता अपने द्वारा बनाई हुई कल्पना मे ही मगन है, चित्रपट से ही सतुष्ट है और उसी मे सुख और आनंद प्राप्त करते है । शिक्षित लोग विभिन्न जानकारो जैसे की जॉन मिल्टन, अलेक्जेडर पोप, जेफ्री चौसर इत्यादि द्वारा की गई मेहनत के फल का दार्शनिक चिंतन और इत्मिनान से आनंद उठाते है। अथोरियन और अरेबियन नाइट्स की अपूर्व कहानिया उनके लिए आनद और खुशी लाती है । साहित्य के अध्ययन के दो पहलुओ मे से एक , सरल आनद और प्रशसा, अन्य है विश्लेषण और सटीक वर्णन । कथा साहित्य का कार्य उसके लेखक की कल्पना मे बनाया जाता है। लेखक कहानी का आविष्कार करता है और पात्र, विषय या कहानी, संवाद और कभी कभी समायोजन भी बनाता है। कथा साहित्य एक सच्ची कहानी बताने के लिए दावा नही करता । इसके बजाय, यह हमे उन अनुभवो मे तल्लीन कराता है जो हमे वास्तविक जीवन मे कभी नही हो सकता है, विभिन्न प्रकार के लोगो से परिचय कराता है जिनसे हम अन्यथा कभी नही मिल सकते, और हमे ऐसे स्थलो की यात्रा कराता है जो किसी भी अन्य तरीके से कभी नही हो सकती। कथा हमे प्रेरित कर सकती , साज़िश मे, डराने मे और नए विचारो मे सलग्न कर सकती है । यह हमे अपने आप को और अपनी दुनिया को नए और दिलचस्प तरीके से देखने मे मदद कर सकती है । क्या अधिक, यह अक्सर महज मज़ा है! एक कुशल लेखक, पाठक के दिमाग मे एक सपने की तरह बना सकते है । यह एक जादू की चाल की तरह है, और यह कुछ है जो आप कैसे करना है सीख सकते है । हालांकि कथा साहित्य बनावटी है, अच्छा कथा साहित्य अक्सर एक समाचार पत्र की रिपोर्ट की तुलना मे अधिक वास्तविक लगता है । क्या आपने एक कथा किताब पढ़ी है जहा आप पात्रो की देखभाल करना शुरू कर दिया है, कभी महसूस किया है कि उन्हे अपने दोस्तो या अपने दुश्मनो के रूप मे ? कभी महसूस किया है की वास्तव मे एक काल्पनिक जगह का दौरा किया हो जिसके बारे मे आपने एक उपन्यास मे पढ़ा हो ? कथा पढ़ने को एक सपना मे प्रवेश करने की तरह महसूस कर सकते । लेकिन उपन्यास लेखन सपने देखने से अलग है क्योंकि आप, लेखक के रूप मे, पूरी तरह नियत्रण कर रहे है, । आप विवरण को पुनर्व्यवस्थित कर सकते है जिससे वह वास्तविकता से सबसे दिलचस्प या सतोषजनक रहे। अतः, यह वास्तव मे सपने देखने से ज्यादा दिन मे सपने देखने की तरह है । एक अध्ययन से पता चलता है कि छोटे बच्चो (उम्र 4-6) जो बड़ी सख्या मे बच्चो की किताबो और फिल्मो से अनावृत होते है, उनके अंदर अन्य लोगो के मानसिक और भावनात्मक राज्यो को पढ़ने के लिए एक काफी मजबूत क्षमता होती है । कथा उपन्यास हमे हमारी सामाजिक दुनिया के बारे मे अवगत कराता है और इसके फल स्वरुप सुनिश्चित विकास एवं समाज को स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहन देता है ।

साहित्य: नये युग मे हर किताब के पीछे एक आदमी है ; आदमी के पीछे दौड़ है ; और दौड़ के पीछे प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण है जिसका प्रभाव अनजाने मे दिखाई देता है । अथोत, हम अब एक बिदु पर पहुँच गए है जहा हमे अच्छी तरह से साहित्य को समझने और आनद लेने की इच्छा ; और पहला कदम है की साहित्य

आवश्यक गुणो मे से कुछ को निर्धारित करे । हम अब तैयार है, अगर परिभाषित करने के लिए न , कम से कम हमारे वर्तमान अध्ययन की वस्तु को थोडा और अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिए । सा , सत्य और सौदर्य के शब्दो मे जीवन की अभिव्यक्ति है ; यह मनुष्य की आत्म , विचारो , भावनाओं , आकाक्षाओ का लिखित ब्यौरा है; यह मनुष्य की आत्मा का एक मात्र इतिहास है, और केवल इतिहास है। पहली महत्वपूर्ण बात यह है कि सभी प्रकार के साहित्य मे आनेवाये रूप से कलात्मक गुणवत्ता है । सभी कला, सत्य और सौदर्य के रूपो मे जीवन की अभिव्यक्ति है; या यो कहे, यह दुनिया मे सत्य और सौदर्य का प्रतिबिंब है, जिस पर हमारा धयान तब तक नही पडा जब तक कुछ सवेदनशील मानव आत्मा द्वारा हमारे ध्यान मे नही लाया गया। साहित्य कला है, जो शब्दो मे जीवन को व्यक्त करता है, जो हमारी अपनी भावना से निवेदन करता हू । व्यापक अर्थ मे, शायद, साहित्य का मतलब है अपने इतिहास और विज्ञान, साथ ही साथ अपनी कविताओ और उपन्यासो सहित सभी जाति के लिखित रिकॉर्ड; सकुचित अर्थ है, साहित्य जीवन का कलात्मक रिकार्ड , और हमारे लेखन मे से ज्यादातर हमारे भवनो से दूर है । साहित्य की दूसरी गुणवत्ता विचारोत्तेजक होना है, हमारी बुद्धि के बजाय हमारी भावनाओ और कल्पना को आकर्षित करता है । साहित्य की तीसरी विशेषता, अन्य दो से सीधे उत्पन्न होने वाल , अपने स्थायित्व है । दुनिया सिर्फ रोटी से नही चलती। इसके लिए जल्दी और हलचल और भौतिक चीज़ो मे स्पष्ट अवशोषण के होते हुए भी, यह स्वेच्छा से किसी भी खूबसूरत चीज को नष्ट नही होने देती है।

साहित्य क्यों महत्वपूर्ण है?

साहित्य कैसे एक संस्कृति के लिए अपरिहार्य रूप मे खुद को दिखाता है? यहाँ विलियम लाग का कहना है ...
यह एक जिज्ञासु और प्रचलित राय है कि साहित्य , सभी कलाओ की तरह, कल्पनाओ का एक मात्र खेल ही है, काफी खुश करने वाला, एक नए उपन्यास की तर , लेकिन किसी भी गभीर या व्यावहारिक महत्व के बिना । साहित्य लोगो के आदर्शों को बरकरार रखता है; और आदर्शों - प्यार, विश्वास, कर्तव्य, दोस्ती, स्वतत्रता, श्रद्धा - मानव जीवन के सरक्षण के लिये सबसे योग्य हिस्से है। यूनान वासी अद्भुत लोग - तब भी उनके सभी महान कार्यों मे से हम कुछ ही आदर्शों का पालन कर पाते - खराब होने वाले पत्थर मे सुदरता के आदर्शों को और अविनाशी गद्य और कविता मे सत्य के आदर्शों। यह बस यूनानी और इब्रेयो और रोम, के साहित्य मे सरक्षित उनके आदर्श थे, जिसने उन्हे वो बनाया जो वो थे और भविष्य की पीढ़ियो के लिए मूल्य निर्धारित किये है।
एक शब्द मे, हमारी पूरी सभ्यता , हमारी आजादी , हमारी प्रगति , हमारे घर, हमारे धर्म , आदर्शों की मजबूत नींव पर आधारित है। कुछ भी नही लेकिन एक आदर्श जो पृथ्वी पर सदा रहेगा। इसलिए साहित्य के व्यावहारिक महत्व का मूल्याकन करना असभव , जो इन आदर्शों को पिता से बेटे के ि , बरकरार रखता है, जबकि, पुरुष, शहर, सरकारे, सभ्यताये , पृथ्वी के चेहरे से गायब हो जायेगी ।

"साहित्य जीवन की अभिव्यक्ति है ..."

विचारोत्तेजकता, कलात्मकत, स्थायी गुणवत्ता इसकी की विशेषता है । इसके दो परीक्षण अपने सार्वभौमिक हित और अपने व्यक्तिगत शैली की है। एक तरफ जो खुशी ये हमे देता है, इसके एलवा इसका उद्देश्य है, मनुष्य को समझना, बल्कि मनुष्य कि आत्मा को ना की उसके कार्यों को; क्योंकि यह हर पीढ़ी के लिये उन आदर्शों को सुरक्षित रखता है जिस पर हमारी सभ्यता स्थापित है, यह सबसे महत्वपूर्ण और आनदमय विषयो मे से एक है जो मानव दिमाग पर कब्जा कर सकते है

कथा साहित्य: नये युग मे कथा साहित्य को मनो जन के एक रूप मे देखा जा सकता , इसके अन्य उपयोग भी है । कथा साहित्य को अनुदेशात्मक प्रयोजनो के लिए प्रयोग किया गया है, जैसे की स्कूल की पाठ्य पुस्तको मे काल्पनिक उदाहरण के रूप मे । यह प्रचार और विज्ञापन मे इस्तेमाल किया जा सकता है । वे आवश्यक रूप से बच्चो पर लक्षित नही होते है, दतकथाये एक स्पष्ट नैतिक लक्ष्य प्रदान करती है । यह कॉर्पोरेट प्रशिक्षण कार्यक्रम मे शिक्षा और सीखने के उद्देश्यो के लिए, मूल्यवान प्रबधन और व्यवहार सबक देने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। हम कहानियो मे अपना काफी समय देते है , प्रति दिन एक आम आदमी दिन के चार घंटे अकेले टी वी देख कर खचे कर देता है । साहित्य और मनोरजन के योग की एक पूरी शाखा कथा साहित्य है ।

कथा साहित्य एक महान माध्यम है जो हमे किसी और के जीवन मे डुबो कर, हमे हमारे जीवन से सवाल पूछने मे मदद करता है ताकि हम उनका जीवन देख सके - और हमारा जीवन - एक बाहरी नजरिए से - बजाय रोजमरो के कामो मे फंसे रहने के जो हमारे दिमाग को सिर्फ खुद पर केंद्रित रखता है बजाय असली तस्वीर के।

कथा, मानव जाति की उत्पत्ति के बाद से, मानव जाति की आत्माओ का पालन पोषण किया है, कम समय मे मनोरजन और सात्वना प्रदान की है। यह मनुष्य के असख्य भावनाओं और विचारो को बाहर निकालने का माध्यम है । अविश्वास को निलंबित करने की क्षमता और कल्पना के बंजर इलाके मे घूमने के माध्यम से मानव को एक बहुत ही वास्तविक उपकरण दिया है जिससे वह जीवन के परीक्षणो के खिलाफ शरण ले सकता है । एक महान कहानी और सभ्य कथाकार की शक्ति हर समाज मे मौजूद है । या प्राचीन काल के कहानीकार हो जो आग के पास दर्शको को इकठा करते और अचेत सभा को विलक्षण कथाये सुनाते या फिर आज के आधुनिक लेखक हो जो रात मे अपने मैकबुक पर कथाएं टाइप करते हो - कथा साहित्य के प्रभाव को नाकारा नही जा सकता । कथा साहित्य की हर समाज मे एक असली और मज़बूत जगह है । उपन्यास लेखन एक लेखक को मानव स्थितियो की हद और सीमा का पता लगाने के लिए अनुमति देता है। कथा साहित्य जगत लेखको को, दुनिया कैसे विश्वसनीय और सम्बद्ध हाथ से तैयार पात्रो के खिलाफ काम करती है के बारे मे सिद्धात का परीक्षण करने की अनुमति देते है । इसके अलावा, यह विध्वसक हो सकता है, की कथा साहित्य एक लेखक को लोगो या सस्थाओ की परोक्ष रूप मे आलोचना करने के की अनुमति देता है।

दुनिया मे वास्तविकता से दूरी को अलग नज़रिये से देखने के लिए कथा हमे एक माध्यम देता है । कल्पना का <u>अव्यवहार्य</u> होना आकर्षक हो सकता है कथा साहित्य को खारिज करने के लिए जैसे की यह कल्पना को निरकुश चलाने के लिए अनुमति देता है। हमे अविश्वास को निलंबित और एक वैकल्पिक वास्तविकता मे कदम रखने की अनुमति की अपनी क्षमता से कथा साहित्य के मूल्य उत्पन्न हुए है । यह हमे प्रेरित या भयभीत कर सकता है, यह हम पर विचार करने और अलग अलग दृष्टिकोण की सराहना करने के लिए अनुमति दे सकता है। कोई फर्क नही पड़ता, उपन्यास बस हमे वास्तविकता का एक अलग सस्करण देखने की अनुमति देता है ।

कथा साहित्य क्यों महत्वपूर्ण है?

क्या कथा साहित्य हमारे लिए अच्छा है ? हम उपन्यास, फिल्मो, टीवी शो, और कल्पना के अन्य रूपो मे डूब कर, हमारे जीवन का बड़ा हिस्सा खचे करते है । कुछ इसे एक सकारात्मक रूप मे देखते है, उनका तर्क है कि बनाई हुई कहानिया हमारे मानसिक और नैतिक विकास को सुधारती है । लेकिन दूसरो का तर्क है कि कथा मानसिक रूप से और नैतिकता की दृष्टि से सक्षारक है । यह एक प्राचीन सवाल है: क्या कथा साहित्य व्यक्तियो और समाज की नैतिकता का निर्माण करता है, या यह इसे तोड़ के नीचे करता है ?

शोधो से लगातार यह पता चलता है कि कथा हमे ढालता है । जितनी अधिक गहराइ से हम एक कहानी के जाद को महसूस करते है, उसके हम पर उतने ही शक्तिशाली प्रभाव पड़ता है । वास्तव म, कथा साहित्य तके और साक्ष्य के माध्यम से मनाने के लिए बनाया गया है जो कथेतर साहित्य (nonfiction), की तुलना मे विश्वासो को बदलने मे अधिक प्रभावी हो रहा है। अध्ययनो से पता चलता है कि जब हम कथेतर पढ़ते है, तब हम अपने मस्तिष्क को खुला रख कर पढ़ते है । हम सूक्ष्म और सदेहवादी है। लेकिन जब हम एक कहानी मे अवशोषित होते है, जब हम अपने बौद्धिक बचाव छोड़ देते है । हम भावनात्मक रूप से स्थानातरित हो रहे है, और इससे यह लगता है की हम चीज़ो के मुताबिक और आसानी से ढलने योग्य बनते जा रहे है । लेकिन शायद सबसे प्रभावशाली खोज यह है की कैसे कथा साहित्य हम पर असर डाल रहा है: मुख्य रूप से बेहतर करने के लिए है, और बदतर करने के लिए नही । फिक्शन अन्य लोगो को समझने की हमारी क्षमता को बढ़ाता ; यह धार्मिक और राजनीतिक धर्मों से अलग हट कर एक गहरी नैतिकता को बढ़ावा देता है। विशेष रूप से, उपन्यास के सुखद अंत वास्तविकता के बारे मे हमारी समझ को लहराते हुए उड़ा कर दूर ले जाते है । वे हमे एक झूठ पर विश्वास कराते है : कि दुनिया वास्तव मे खुद की तुलना से थोड़ी और अधिक है । लेकिन उस झूठ पर विश्वास के समाज के लिए महत्वपूर्ण प्रभाव है - और यह यह समझाने मे भी सहायता कर सकता है की मनुष्य पहले कहानियाँ क्यो सुनाता है ।

कथा साहित्य सुरक्षित नहीं है - इसलिये हमे इसकी आवश्यकता है! अभी हाल तक, हम केवल व्यक्तियो और समाज पर कथा साहित्य के वास्तविक , मनोवैज्ञानिक प्रभावो के बारे मे जानने मे सक्षम हुए है । लेकिन मनोविज्ञान और व्यापक आधार वाली साहित्यिक विश्लेषण मे नए अनुसधान अत मे अटकले के दायरे से बाहर नैतिकता के बारे मे सवाल उठा रही है। यह देखने के लिए मुश्किल नही है की सामाजिक आलोचक अक्सर कल्पना से निराश क्यो है । और अगर सरासर समय निवेश पर्याप्त नही है, तो विषय सूची है । कथा के शुरुआत के बाद से, नैतिक रूप से प्रतिकारक व्यवहार कहानियो के लिए एक महत्त्वपूर्ण मसाला रहा है । अपशब्द, अश्लीलता एवं अधर्म के साथ कथा साहित्य के जुनून ने विभिन्न तबके के आलोचको को उपन्यास, हास्य किताबे, और टीवी को युवाओं के मूल्यो को ख़राब एवं भ्रष्ट करने के लिए निंदा करने का मौका दिया है ।

वे जो कथा साहित्य मे सदेशो के बारे मे चिंतित है - चाहे रूढ़िवादी या प्रगतिशील है - उनकी बात मे भी कारण है । कथा साहित्य खतरनाक है क्योंकि यह व्यक्तियो और पूरे समाज के सिद्धातो को सशोधित करने की शक्ति रखता है ।लेकिन कथा कुछ ऐसा भी कर रही है जिसका सभी राजनीतिक गुटो को समर्थन करना चाहिए । सस्कृति युद्धो की स्थानीय लड़ाइयो के अलावा, लगभग सभी कहानिया, शैली की परवाह किए बिना, यह समाज के सहानुभूति के भंडार को बढ़ा रहा है और शालीनता के नीति को सुदृढ़ कर रहा है, जो राजनीति से भी गहरा है ।

कथा साहित्य को अक्सर मानव जीवन मे, अगर कुछ बुरा नही तो मात्र सजावट समझा जाता है। लेकिन कहानी का उभरता हुआ विज्ञान यह दर्शाता है की कथा साहित्य मात्र हवा मे हाँथ पांव चलने से बेहतर है । सहानुभूति बढ़ाने के द्वारा, कल्पना सामाजिक घर्षण कम कर देता है। साथ ही, कहानी एक प्रकार का चुम्बकीय बल लगाती है तो हम सभी को साझा मूल्यो की तरफ खींचता है । दूसरे शब्दो मे, ज्यादातर कथाएं, यहां तक कि निरर्थक कहानियाँ भी, अंत मे जनता के हित मे होती प्रतीत होती है। साहित्य, एक विकल्प के रूप , दुनिया के पास किसी और व्यक्ति को पूरे दिल से समझने के लिए सक्षम होने के लिए सबसे निकटतम उपाय है । इसके अलावा, यह स्पष्ट है कि ये कहानियो वास्तव मे हमारे विचारो को बदल सकते है । इतिहास भी,यह दर्शाता है की कथा

साहित्य मे हमारे सामाजिक मूल्यो को, बेहतर या बदतर, बदलने की क्षमत है । कथा साहित्य हमे दुनिया को गुलाबी रंग शीशे से देखना सिखाता है ।

"साहित्य एक समृधि; कथा एक जरूरत"

जी.के. चेस्टरटन द्वारा यह अद्भुत भाव गहराइ से साथेक है । कल्प (कथा साहित्य) का काये साहित्य का एक काम है , लेकिन " साहित्य " शब्द कथा साहित्य से कही ज्यादा मूल्यो को खुद मे सम्मिलित किये हुए है । साहित्य गैर- कथा साहित्य (सस्मरण , जीवनी, और अन्य काम जिनमे तथ्यात्मक होने की गुंजाइश है) को भी दशोता है ।

****

"शुरू में वह कीजिए जो आवश्यक है,

फिर वह जो संभव है और अचानक

आप पाएंगे कि आप तो वह कर रहे हैं

जो असंभव की श्रेणी में आता है।"

-संत फ्रांसिस

करना है उत्थान साथी

- ए.एम.भट्ट, वै.स., मौ.का.अंबिकापुर

छोड़ अब मद्यामेनी को,
दूर कर छुद्र गामेनी को
सदेश लाइ है हँसती उषा किरणे,
क्यो पड़ा है ग्लान साथी ।।

करना है उत्थान साथी ।
छिटक रही है सूये किरणे,
खिल रही है पुष्प भी तरू मे ।
पद्मम सुमन दल बीच मस्त,
भ्रमर कर रहा मधुगान साथी ।।

करना है उत्थान साथी ।
कर से कर मिला हाथ को हाथ दे,
जीवन को नवजीवन का प्रभात दे
दूर त्यज्य दरिद्र बाल-बाला के,
विद्या विवेक वैभव का बन पथ गान साथी ।।

करना है उत्थान साथी ।
देख दर पे कोई याचक खड़ा है,
पथ छोर पर कौन बेसुध पड़ा है
क्यो माँ से दूर उसका लाल खड़ा है
उठने दे अतर मे पीड़ा का झंकार साथी ।।

करना है उत्थान साथी ।
उठा कर दोनो भुजा अपनी,
उषा अधे आज भानू का दे ।
जागरण तप आ गया है,
माँग ले वरदान साथी ।।
करना है उत्थान साथी ।

****

अंजन

-डी.एस.गायकवाड, स.मौ.वि-I, प्रा.मौ.के,नागपुर

कहते है-

सारे जहा से अच्छा हिंदुस्ता हमारा, हम बुलबुले है इसकी यह गुलिस्ता हमारा ।
असहाय,आतंकित, भय से कांपती वह,
जब घर लौटती तो, दिल कापता हमारा ।।
वजह भी न बताती, मौन भी न तोड़ती वह,
आशंकित हम, राह के वे **'मवाली-मनचलों'से** दिल कापता हमारा ।।
भय भी कांपे,शरम भी शर्म-सार ,**रक्षक ही तक्षक**,
क्या कहे, क्या करे , फिर दिल कापता हमारा ।।
क्या कसूर उसका की स्त्री है वह,
जनन भी हमारा उसीकी उदर से,
अत्याचार-बलत्कार के क्षण ,
क्यो- नही दिल कापता हमारा ।।
सारी मयोदा उसी को, लाज-लज्जा उसी को,
यहाँ तक क्या पहने, क्या नही,
उसकी ठेकेदारी समाज को,
याद करो बेशरमो उसके,
वक्ष से निकलती दुध सी "अमृत-धारा",
जीवन है, हमारा ।।
नजर से उसके, लाज से उसके,
मचलते तुम-नीच यह नही समझते,
के वह फितरत है-उसकी,
इश्वर की प्राकृतिक देन है उसकी,
तुम्हारी वासना से मद नजर,
शिकारी कुत्तो की तरह, नोचने उसके देह को,
होड़ मे अग्र□□ □□ □□ढ़ी-
क्या यही गुलिस्ता है हमारा ।।
□□-□□,□□-वक्त घमड से ऊची हमारी गदेन,
नही देख पाती हमारी माँ-□□□-पत्नी की,
तुम्हारे लिए ही समर्पित-त्यागमय □□□□ की उलझन,
क्या ? ये असहाय नारी दासी है तुम्हारी,
फिर मत कहो ना यार,

□□रे जहा से अच्छा हिंदुस्ता हमार -
□□डित टूटे हुए नारी के जख्म पर करते,
□ □ □□□□ □□बो-गरेबो कथन,
और वोट बैंक □□लिए स्त्री-अत्याचार का करते समर्थन,
कैसी होगी नारी सुरक्षित इस महान देश मे,
□□ □□□□रहेगे धु□- 15 अगस्त, 26 जनवरी को,
□□□रे जहा से अच्छा हिंदुस्ता हमा -
समाज के दाभिक ठेकेदारो-
ये एक साधारण कवे, □ □ □□□□ □□□□ □,□
तुम्हारें आंखों में अंजन,
मत करो आरक्षण के लिए मंडल, □□ □□□ निर्भया के लिए कैंडल,
क्या काफी है मेरे दोस्तो- ये दिखावे का बडल,
युवाओ भर दो अपने बाजुओ मे दम याद करो,
एकलव्य को- याद करो कृष्ण को,
मिटा दो व्याभिचारीयो □□, मिटा दो बलत्कारियो □□,
करो रक्षा अपनी म -बहने-बेटीयो की,
□□□ □□ □□ □□□□□□,
□□रे जहा से अच्छा हिंदुस्ता हमारा-
इस आर्यो-□□रो की भूमि मे, इस राणाप्रताप के भूमि मे,
इस शिवाजी महाराज कि भूमि मे,
हर सास भी उन्ही की होनी चाहिए-
□□□-रस भी उन्ही की भाति दौड़ना चाहिए-
उनके मर्दान□□-□□रता की आग हमारे रोम-रोम मे जलनी चाहिए-
राह के मुक दशेको- करो प्रण, □□धो मुठ्ठिया-
□□ □ठो-बचाओ अबला नारी को,
हनन करो बलत्का यो की मनसा,
कतल करो जहरीली वासना,
'राष्ट्रपिता" भी इस वक्त □□फ कर देगे तुम्हे,
फिर बिनद□□ □□□-सारे जहा से अच्छा हिंदुस्ता हमारा, हम बुलबुले है इसकी यह गुलिस्ता हमारा □□

****

भारतीय प्रायदीप में मानसून

-पोषण लाल देवांगन, स. मौ. वि-I,मौ.के.रायपुर

गर्मी के दिनो मे समुद्रतटीय शहरो जैसे - मुब□, चिन्नई, पुरी, तिरुअनतपुरम , पणजी आदि मे देखा जाता है कि सायकाल के समय समुद्र पर की ठडी व नम हवाए पूरे शहर मे छा जाती □□□□□□□□ □□ □□□□□ अपेक्षाकृत कम व सुहाना रहता है □इसी तरह शीतकाल मे इन्ही शहरो मे सायकाल के समय स्थल भाग के शीघ्र ठडी हो जाने के कारण समुद्र पर की अपेक्षाकृत गरम हवाए शहरो की ओर प्रवाहित होती है, जो इन शहरो को □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□ कुल मिलाकर एक ओर जहा ये शहर गर्मी के दिनो मे अधिक गरम नही होते वही ठडी के दिनो मे ये अधिक ठडा भी नही रहते □ क्या आपने कभी इन घटनाओ का कारण जानने की कोशिश की है ? आइये इस सम्बन्ध मे चर्चा करे ।

यह एक सच्ची बात है कि जलीय भाग की अपेक्षा स्थलीय भाग मे जल्दी ही गरम या ठडा होने की क्षमता होती है या यूँ कहे कि स्थलीय भाग मे तापीय ऊर्जा को ग्रहण करने या त्यागने की क्षमता जलीय भाग की अपेक्षा अधिक होती है□ यही वह मूल सिद्धात है जिसके आधार पर समुद्रतटीय शहरो के तापमान मे अधिक उतार-□□□□ नही होता है, और समूचा मानसून भी इसी सिद्धात के अधीन क्रियाशील होता है □ गर्मी के दिनो मे दिन भर की सूरज की गर्मी से स्थल भाग के शीघ्र गरम हो जाने के कारण वहाँ की हवाए गरम होकर हल्की व विरल होकर उध्वे गमन करती है । □□□□□□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ इस कम दाब के आपूतिस्वरूप समुद्र की आद्रे व अपेक्षाकृत ठडी हवाए स्थल की ओर प्रवाहित होती है, □□ □□□□□□ (Sea Breeze) □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ विपरीत ठडी के दिनो मे रात के समय स्थल भाग के शीघ्र ठडी हो जाने के कारण यहाँ की ठडी हवाये जलीय भाग (समुद्र) की ओर प्रवाहित होती है जिसे थल समीर (Land breeze) □□□ □□□□ □□□ किन्तु इस थल समीर के साथ ही इसके विपरीत दिशा मे जलसमीर भी सवाहिनक धारा के रूप मे प्रवाहित होती है □ इन्ही कारणो से समुद्रतटीय शहरो के तापमान मे अधिक उतार-चढ़ाव नही होता है□

अब यदि इस घटना के समयातराल को एक दिन के स्थान पर एक ऋतू के रूप मे लिया जाए तो भी घटना बड़े पैमाने पर ठीक वैसी ही होती है जैसा ऊपर वर्णित है ।□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□□ उदाहरण ही मानसूनी हवाए अथवा मानसून कहलाता है□ ग्रीष्म ऋतू के पश्चात जून से सितम्बर के बीच भारतीय प्रायदीप मे बहने वाली मानसूनी हवाए दक्षिण पश्चिम दिशा से आती है इसलिए इसे दक्षिण -पश्चिम मानसून या ग्रीष्मकालीन मानसून भी कहते है ।जबकि थलसमीर का उदाहरण स्वरुप माह अक्टूबर से दिसबर के बीच दक्षिण भारत मे उत्तर पूर्व दिशा से बहने वाली मानसूनी हवाओ को उत्तर-पूर्व मानसून या रिट्रीटिंग मानसून कहा जाता है □ इसका प्रभाव भारत के दक्षिण पूर्व तटीय क्षेत्र (आध्र-प्रदेश व तमिलनाडु) पर ही होता है□

ग्रीष्म ऋतू मे सूर्य पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध मे सीधा चमकता है जो उस क्षेत्र पर अत्यधिक गर्मी प्रदान □□□□ □□□ इससे भारत देश के स्थलीय भाग विशेषतः पश्चिमोत्तर भारत पर एक अर्द्ध स्थायी कम वायुदाब क्षेत्र □□□ □□□□ □□□ इसके विपरीत दक्षिणी गोलार्द्ध मे सूर्य प्रकाश के तिरछा पडने के कारण वहाँ शीत □□□□□□□ □□, अतएव वहाँ ठडी हवाए अधिक वायुदाब क्षेत्र मे होती है ।

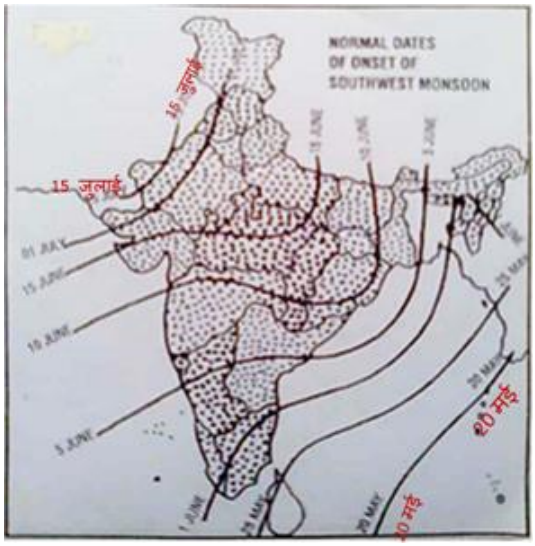

चित्र-1 मानसून आगमन की सामान्य तिथियाँ

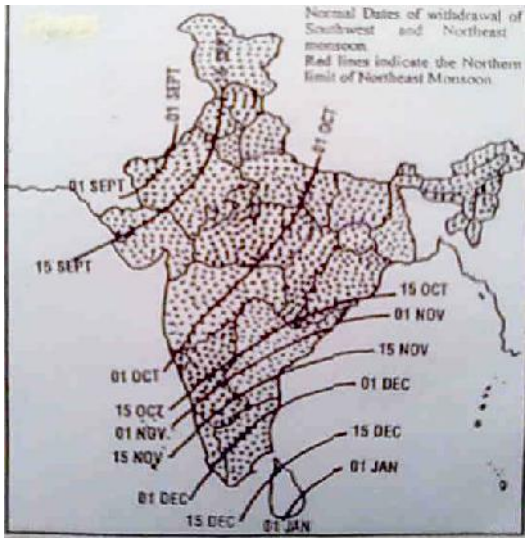

चित्र-2 मानसून वापसी की सामान्य तिथियाँ

हिंद महासागर के उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्धों मे निर्मित क्रमशः कम दाब व अधिक दाब क्षेत्रो तीव्र दाबातर निर्मित होने के कारण भूमध्य रेखा पार के अधिक दाब क्षेत्र से तेज, अत्यधिक नमीयुक्त व अपेक्षाकृ ठंडी व्यापारिक हवाए भारतीय प्रायदीप की ओर 5-7 किलोमीटर ऊचाई के पटे मे बहती है । □□□□□□□□□ □□□□ □□ भारतीय प्रायदीप के रास्ते बगाल की खाडी की ओर बहती हुई पूर्वोत्तर भारत मे हिमालय पर्वत से टकराकर सम्पूर्ण उत्तर भारत की ओर प्रवाहित होती है □ इन्हे उत्तर मे स्थित हिमालय पर्वत द्वारा रोक लिया जाता है । इनमे नमी की प्रचुरता होती है तथा पर्वतीय क्षेत्रो से गुजरने के कारण ठंडी होकर वर्षा की फुहार के रूप मे भारतीय उपमहाद्वीप मे पूरे वर्षा ऋतू मे पृथ्वी पर गिरती है । इन्हे मानसूनी वर्षा कहते है । दक्षिण-पश्चिम मानसून वाली इस अवधि को ही वर्षा ऋतू के □□□ □□□□□ □□□□ □□□

भारतीय प्रायदीप मे मानसून सबसे पहले अडमान निकोबार द्वीप समूह मे लगभग 20 □□ □□ □□□ □□□ तत्पश्चात केरल मे 1 □□ □□ □ □□□□ □□□□□, कर्णाटक, आंध्रप्रदेश व उत्तर पूर्वी भारत मे शनैः शनैः उत्तर की ओर अग्रसर होते हुए महारा , छत्तीसगढ़, □□□□, बिहार व पश्चिम बगाल तक मध्य जून मे पहुचता है । उत्तरोत्तर आगे बढ़ने की यह प्रक्रिया जुलाई भर चलता है और जुलाई के अत तक उत्तर पश्चिम भारत स्थित राजस्थान मे पहुचता है □ इस तरह मई के अतिम सप्ताह मे अडमान मे पहुचकर जुलाई के अतिम सप्ताह मे सम्पूर्ण भारतीय प्रायदीप मे मानसून छा जाता है । दक्षिण भारत स्थित पश्चिमी घाटी पर्वत श्रेणी के पीछे की ओर स्थित होने के कारण तमिलनाडु प्रदेश इस मानसून के प्रभाव से वंचित रहता है फलतः यहाँ दक्षि -पश्चिम मानसूनी वर्षा अत्यत कम होती है ।

सूर्य की स्थिति मे भूमध्य रेखा की ओर गति के कारण पश्चिमोत्तर भारत से सितम्बर माह से दक्षिण-पश्चिम मानसून का प्रभाव समाप्त होने लगता है और उत्तर भारत से थलसमीर का बहाव प्रारभ हो जाता है । इसे□ मानसून की वापसी के रूप मे देखा जाता है जो भारतीय प्रायदीप मे वर्षा ऋतू की समाप्ति का सूचक होता है । मानसून वापसी की यह प्रक्रिया अक्टूबर के अत तक चलता , किन्तु इसी के साथ ही प्रारम्भ होता है थलसमीर जनित उत्तरपूर्वी मानसूनी हवाओ का आगमन □ ये पवने पूर्वोत्तर भारत के साथ साथ दक्षिण भारत के तमिलनाडु और आंध्रप्रदेश मे अत्यधिक वर्षा प्रदान करती है □ इसलिए तमिलनाडु और आंध्रप्रदेश के पूर्वी तटीय क्षेत्र मे यह वर्षा ऋतू के रूप मे देखा जाता है □ इस क्षेत्र मे वर्षा का यह चक्र दिसबर माह तक चलता है । कुल मिलाकर मानसूनी

हवाओ की प्रक्रिया भारतीय उपमहाद्वीप मे मई के अंतिम सप्ताह से प्रारभ हो कर दिसबर माह के अंतिम सप्ताह □□ □□□□ □□

भारतीय प्रायदीप मे मानसून की क्रियाशीलता या सरल भाषा मे कहे तो अच्छी या कमजोर मानसून होना अनेक बातो पर निभेर करता है □ इनमे से एक कारक है अल-□□□ □□ □□-नीना का प्रभाव □ □□□□ □□□□ विज्ञान विभाग ने वषे मे वक्तव्य दिया था कि भारत मे अल नीनो फैक्टर के सक्रिय होने के कारण मानसून 2014 सामान्य से कम रह सकता है□ यह देखा गया है कि हिद महासागर मे अल-□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ है जबकि इसके विपरीत ला-नीना के प्रभाव से मानसून सामान्य भी अच्छा होता है □ इसके अलावा मानसून की क्रियाशीलता अरब सागर व बगाल की खाडी पर बनाने वाली निम्न वायुदाब निकायो की सख्या व तीव्रता करता है □ पर भी निभेर भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा पिछले कई वषों से मौसम सबधी आकड़ो के आधार पर मानसूनी वषो का दीघोवधि पूवोनुमान मानसून प्रारभ के पूवे मई के प्रथम सप्ताह मे किया जाता है। वषे 2014 मे मानसून सबधी पूवोनुमान मे कहा गया था कि, "मानसून के मौसम मे इस बार पहले के मुकाबले करीब 95 फ़ीसदी बारिश होने की सभावना है। इसमे 5 प्रतिशत का □□□□□ □□ □□□□ □□□" मानसून वापसी के पश्चात इसी विभाग द्वारा जारी रिपोटे के अनुसार इस वषे मानसूनी वषो सामान्य से 94 प्रतिशत रहा जो पूवोनुमान के सही होने का परिचायक है □

भारतीय प्रायदीप मे कृषि व सामान्य जनजीवन के लिए आवश्यक जल की मात्रा मानसूनी वषो से ही प्राप्त होती है। एक आकलन के अनुसार देश मे वाषिक वषो का 80 प्रतिशत भाग मानसून मे ही प्राप्त होती है। मानसून अच्छी होने पर पयोप्त वषो से भरपूर फसलोत्पादन तथा सामान्य जनजीवन के सभी क्रियाकर व्यवस्थित रूप से चलते है, जबकि कमजोर मानसून की स्थिति मे देश की अथेव्यवस्था चरमरा जाती है। अन्न उत्पादन तथा व्यापारिक क्रिया-कलाप बुरी तरह प्रभावित होती है। भयकर सूखा व भूखमरी के कारण आन्त्रशो जैसी भयकर बीमारियाँ घर कर लेती है □ □□□□ □□-□□□□ □ □□पक्षियो के पलायन यः-तत्र सवेत्र नजर आते है □ ऐसे तो अच्छे मानसून मे भी भयकर बाढ़ से तबाही होती है, जिससे अनेक लोग बेघरबार हो जाते है। किन्तु भरपूर फसलोत्पादन से ये कठिनाइया विशेष महत्व नही रखती है।

****

“जीवन सौंदर्य से परिपूर्ण है। इसे देखें, महसूस करें, पूरी तरह से जीएं, अपने सपने पूरे करने के लिए पूरी कोशिश करें।„

-एशले स्मिथ

चार पंक्तियां

-आर.एन.यादव - स.मौ.वि.-II, प्रा.मौ. के.,नागपुर

भाईचारा भी, अब पशु का चारा हो गया है ।
इंसान भी, पशु के समान बेचारा हो गया है ।।
आदमी था पहले, अब तो आवारा हो गया है ।
इंसान से इंसानियत का दूर किनारा हो गया है ।।

अपने ही, दिल तोड़ते है, कोई दूसरा नहीं ।
अपने ही, मुँह मोड़ते है, कोई दूसरा नहीं ।।
क्या बयां करें अब, दिखाये, किसे दिल के छाले ।
दूर हो गये हैं, अब वो साथ चलने वाले ।।

****

अण्णा की ललकार

- आर.डी.मेश्राम, स.मौ.वि.-I, प्रा.मौ. के.,नागपुर

गलो-गलो और ग□□-□□व मे,
गूँज रहो अण्णा को ललकार,
□□ □□, □□ □□,
देश मे भ्रष्टाचा□ □
शिक्षा को व्याप□ □□□□,
भ्रष्ट किया मंदिर शिक्षा का,
अन्यायियो का बन गया है रक्षव,
मंदिर न्याय रक्ष □□,
शिक्षा और न्याय □□□□ □□,
बद करो अब तुम व्याप□□
गलो-गलो और □□□-□□□ मे,
गूँज रहो अण्णा को ललकार ।
वोट और नोट को नीति से ससद जा बैठे,
□□ □□-आधिपति जन-न□□□,
□□ □□□ □□ □□□ □□□□□,
कमे कर रहे जैसे खलनायक,
लोकतत्र का पाठ प□-□□□□,
□□ □□ □□ मत करो व्यभिचार,
गलो-गलो और □□□-□□□ मे,
गूँज रहो अण्णा को ललकार ।
लूट देश को दौलत को,
किया विदेशी तिजोरियो मे बद,
जजेर देश को हालत,
सहेजे हुए है गरीबो के पैबद,
चद लोगो के सुख के खातिर,
देश का न होने देगे बटाधार,
गलो-गलो और □□□-□□□ मे,
गूँज रहो अण्णा को ललकार।

कस के पाप से जग को कृष्ण □□□□□,
अहकारी रावण व□□ श्रीराम ने सहारा,
□□□ □□□□ □□पी देखो आए अण्णा,
निश्चित है भ्रष्टाचा□ अब अत तुम्हार□,
अन्याय,अत्याचार की हो गई सीम□□,
□□-□□ □□ □□, रहा प्रतिकार,
गली-गली और □□□-□□□ मे,
गूँज रही अण्णा की ललकार,
□□□- □□□, □□□ □□□,
देश से भ्रष्टाच□□ □

****

“रोशनी फैलाने के दो तरीके हैं, या तो दीपक बन जाएं या उसे प्रतिबिम्बित करने वाला दर्पण।„

-एडिथ व्हॉर्टन

क्या आप जानते है ? इस हीरो को

-शांता उन्नीकृष्णन, वरीष्ठ अनुवादक, प्रा.मौ. के.,नागपुर

एक ऐसा भारतीय जिस पर हर भारतीय को गवे होगा , जो वास्तविक जीवन मे हीरो है और हीरो साइकिल के निमोता भी है, आप है श्री ओ.पी. मुजाल जिन्हे ओ.पी. [illegible] आप लुधियाना मे स्थापित हीरो साइकिल के मालिक है, [illegible] प्रतिदिन 19,500 साइकिल का उत्पादन करते है और यह दुनिया के किसी अन्य कम्पनियो की अपेक्षा अधिक है आज इनका नाम 'गिनीस बुक ऑफ वल्डे रिकाडे मे दजे है ।

एक महत्वपूणे बात यह है कि आज कि इस बढ़ती तकनीकी उपकरणो के रफ्तार वाली दुनिया मे भी ओ.पी.[illegible], काफ्रेस कॉल तथा इ-मेल का इस्तेमाल नही करते वे काये करने मे ज्या[illegible] विश्वास [illegible] लेखिका प्रिया कुमार ने, छियास्सी वषिय श्री ओ.पी.मुजाल जो की मित्त [illegible] पहली बार खुलकर बोलने के लिए प्रेरित किया और जिसके आधार पर इस बिजनस मैन की मनमोह[illegible] कहानी लोगो तक लाइ जा सकी है । श्री [illegible].मुजाल को हीरो साइकिल बनाना या बेचना केवल बिजनेस नही था वो उनकी जीवन शैली थी । पच्चपन साल पुराना हीरो साइकिल उनके चार भाइयो के धैये एव सरक्षण का उत्पाद है जिन्होने किसी भी विक[illegible] परिस्थितियो मे इमानदारी का दामन नही छोड़ा [illegible]. जी ऐसे परिवार से है जहां बडो का आदर किया जाता है और बच्चे [illegible]भाइयो का चरण स्पशे करते है ।

[illegible].मुजाल जी के परिवार ने पहले अपना बिजनेस साइकिल के विभिन्न भागो को बेचकर शुरूवात [illegible] काये की जिम्मेदारी ओ.पी.[illegible], जो कि केवल दसवी कक्षा उत्तीणे थे, के कधो पर इस ब[illegible]काये को करने का काये भार सौपा गया वो एक शहर से दूसरे शहर जाकर इसके लिए आडेर इकट्ठा करते थे । इस काये के लिए वो [illegible] के तीसरे श्रेणी मे यात्रा करते थे और सबसे सस्ते होटल मे रहते थे । उनके जीवन मे एक समय ऐसा आया जब उनके द्वारा बेची गइ साइकिल के भाग (part) अच्छे दजे के न होने से अस्सी प्रतिशत उनका बिजनेस [illegible] गया । उनके भाइयो ने हिम्मत नही हारी और इस बिजनेस को पुनेजीवित करने के लिए दोस्तो औ[illegible] रिश्तेदारो से उधारी (loan) लिया । इत्त[illegible] 'मुख्यमत्री श्री प्रताप सिह खैरोन' ने[illegible] बैठक मे मुजाल भाइयो से कहा कि वो साइकिल के भागो (parts) को न बेचकर पूणे साइकिल का निमोण करे, औ[illegible] इस हीरो ब्रैड ने ही हीरो साइकिल का रूप लिया । [illegible]ब्राड वाले हरकुलिस तथा रैली साइकिलो [illegible] दिया और फिर पीछे मुड़[illegible]र कभी नही देखा ।

आज लुधियाना मे श्री ओ.पी.मुजाल उच्चतम टैक्स देयको मे से एक है उन्होने बाजार मे अपनी पक[illegible] ली और शहर दर शहर जाकर, इमानदारी और अटूट व्यवसायिकता से विजय हासिल किया 'हीरो साइकिल' [illegible] आज देश की शान है, भारतीय मार्केट मे उनका सैतीस प्रतिशत शेयर (37) है । लेखिका प्रिया कुमार का कहना है कि ओ.पी. जी व्यक्तिगत रूप से माल खरीदने बेचने से लेकर हर चीज की देख-रेख करते है । जब काये करने की बारी आती है तो वो श्रेष्ठतम काये निष्पादन का माग करते है ।

उनके कपनी मे 3500 से अधिक कमेचारी काम करते है और उनकी खासियत यह है कि वो प्रत्येक कमेचारी को नाम से जानते है और यदि उन्हे पता चले की उनका कोइ कमेचारी तकलीफ मे है तो वे स्वय[illegible] उनकी मदद

□□□□□□ □□□□□ 'हीरो डीलरो' को उनके परिवार का सदस्य मानते है । हीरो साईकिल की गल्ती □□□□□□ □□□ भी डीलर मुश्किल मे न प□□□□ □□□ □□ □□ बेहद ध्यान रखते है । यदि कोई डीलर लुधियाना आते है त □□□□पाते ओ.□□. उन्हे लेने स्वय□रेलवे स्टेश□ □□□□है , और उनके रहने की व्यवस्था अपने घर मे ही करते है । लोगो मे उनकी दिलचस्पी और चिन्ता उन्हे □□-गद कर देती है । इस प्रक्रिया के दौरान बिजनेस मे उन्होने अद्वितीय वफादारी कायम की है । यदि व उन्हे उत्पादन की मात्रा बढ़ानी हो तो वे भावोत्ते□□ □□ □□□□□□ बात को कमेचारियो के सामने रखते है । दस मिनट के अदर कमेचारियो को ज्ञात हो जाता है कि उन्हे उत्पादन के □□ □□ □□□□ □□

□□ □□□ □.□□. को ज्ञात हुआ की उनके साईकिल का दजो अतेराष्ट्रीय मानक स्तर की तुलना मे कम है तो उन्होने उत्पादन बद करवा दी और मार्केट मे उपलब्ध साईकिलो को वापस बुलवाकर उसमे उत्कृष्ठ रूपान्तरण किया । उसके पश्चात ही उन्हे बाजार मे उतारा गया । कपनी की एक खास बात यह है की साईकिल को पूणे रूप से बनाकर उसे गोदामो मे नही रखा जाता है , □□ □□□जैसी जरूरत है या कहे तो जिसकी जितनी माग है उतनी ही साईकिलो को पूणे रूप से बनवाकर उन्हे उपभोगताओ को भेजा जाता है इसलिए य□□गोदामो की व्यवस्था नही है बिल्कुल जापानी शैली के अनुसार ।एकबार लुधियाना मे काम बद का आव्हान □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ भिजवाना मुश्किल था उस समय सिर्फ ओ.□□. □□ □□□□ □ब्द पर उनके सारे कमेचारी काम पर पहुँचे और काये को पूणे किया उस काये मे वे स्वय भी उन कमेचारियो के साथ काम पर लगे रहे । स्वय ही श्री ओ.पी.□□□□ इतने कमेठ व्यक्ति थे की बड़े र□□□□काये को वे समय से पूरा करने की क्षमता रखते है और उन्हे लोगो को एक □□ रखकर काये करवाने मे भी उनकी क्षमता अपरपार है । उनकी विशेषताओ मे एक बड़ी बात यह है कि वे ना सुनने के आदि नही है, लापरवाही और गल्तियो मे फरक करना वो अच्छी तरह □□□□□□, अपने उसूलो के पक्के □□ऐसे महान व्यक्ति को जानना जिनका देश के विकास मे महत्वपूणे योगदान है परम सौभाग्य की बात है ।

****

"हमारा लेखन ऐसा नहीं होना चाहिए कि पाठक हमें समझ पाए, बल्कि ऐसा होना चाहिए कि वह किसी भी तरह हमें गलत न समझ जाए।„

- क्विन्टिलीयन

सामाजिक बुराइयों से मुक्ति हेतु समग्र क्रांति की आवश्यकता

- एस.के.कोंगे, स.मौ.वि.-II, प्रा.मौ. के.,नागपुर

स्वार्थपरता, □□□□□□, □□□□, निष्ठुरता□□, विलासिता, □□□, आलस्य, अज्ञान, अहकार आदि दुर्गुण मनुष्य की अधार्मिकता के कारण उत्पन्न होते है । ये दुर्गुण जब अनेक लोगो मे फैल जाते है, तब □□□□□□□□□□□□□□□□□□□□ कुप्रथा का, रूप धारण कर लेते है । एक के देखा-देखी दूसरा उन्हे अपनाता है । जन स्वभाव मे वे बाते ऐसे शामिल □□ □□ती है कि उनमे कोई विशेष बुराई प्रतीत नही होती । समाज मे ये कुप्रथाएँ अपना हानिकारक प्रभाव छोड़ती है तथा लोग उनके कारण हो जाते है । सामाजिक कुरीतियाँ बीड़ी, हुक्का, □□□, □□□□, अफीम, □□□, □□□□□□, □□□□ आदि के खाने-□□□□□□□□□□□□, स्वास्थ्य और □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□, सट्टा, लॉटरी, □□□□□□□□□□है जो बिना मेहनत किए धन प्राप्त करने के लालच से उत्पन्न होती है । दूध, □□, □□□□,□□□□□□आदि मे मिलावट करके उससे अनुचित लाभ उठाना, चोरी, □□□, उठाईगिरी, जेबकटी, □□□□□□□, □□□□□□, □□□, □□□□□ - आदि के दुस्साहस□, □□ □□□□□, □□ □□□□□, अधिक मुनाफा लेना, बढिया बताकर घटिया चीज देना, कम मेहनत करके अधिक वेतन लेना, टैक्स □□□□□, रिश्वत देना और लेना आदि आर्थिक भ्रष्टाचार से समाज का आर्थिक ढाँचा □□□□□□□□□□□□ □□□□ इन बुराइयो मे लगा हुआ व्यक्ति अन्य अनेक बुराइयो की ओर अग्रसर होता है ।

उद्दडता, □□□गीरी, अवज्ञा, अशिष्टता, असहिष्णुता, □□□□ □□□□□□□□ □□- घर मे मिल सकते है । नई पीढ़ी □□ □□□□ □□ □□कियो मे ये प्रवृत्तियाँ और अधिक ब□ रही है । मर्यादाओ मे रहना सबको बुरा लगता है । फैशनपरस्ती, शौकिनी, फिर□□□□□□, □□□-□□□□, विलासिता, □□□□□□, गदी पुस्तके, व्यभिचार, अमर्यादित □□□□□□, अप्राकृतिक व्यभिचार आदि बुराइयो के कारण हमारा शारीरिक एव मानसिक स्वास्थ्य चौपट □□□□ □□ रहा है । चोरी, □□□, □□□□□, हत्या, अपहरण जैसी पैशाचिक प्रवृत्तियाँ अपनाने के लिए जिनके पास निष्ठुर म□ □□ आसुरी बल होता है, वे इस मार्ग को अपनाते हुए अपनी शूरवीरता का बखान करते है । जगली कानून मनुष्य समाज मे भी चलता आया है । जिसकी लाठी उसकी भैस वाली नीति अपनाई जाती रही तो स्नेह सौजन्यता□ □□ लिए कोई स्थान नही रहेगा और न ही बड़ो के सहयोग से छोटो को अपने विकास मे सहायता की आशा हो सकेगी □ समाज की वैवाहिक व्यवस्था एक अभिशाप बन रही है । बाल विवाह, वृध्द विवाह, अनमेल विवाह, □□□, विवाह के समय सामर्थ्य से अधिक कीमती जेवर, वस्त्र एव दिखावे की चीजो की आवश्यकता, ब□□□□ □□□□□□□□ प्रीतिभोज मे अपव्यय आदि ऐसे कारण है, जिनसे विवाह जैसा साधारण सस्कार एक सिरदर्द बना हुआ है । कितनी ही कन्याओ को इन्ही कुरीतियो की वेदी पर बलिदान होना □□□ □□□ □□- पतीतो के नाम पर फैला हुआ अज्ञान समाज के लिए कलक है । देवी के आगे भैस बकरे, □□□,□सुअर आदि की बलि देने की प्रथा अभी भी अनेक प्रातो मे जारी है और नवरात्र के दिनो मे हजारो निर्दोष पशु-पक्षियो का खून बहाया जाता है । इससे नाना प्रकार के अनाचार फैलते है । महिलाओ की स्थिति भी दयनीय है । परदा प्रथा और सामाजिक हीनता के कारण वे शिक्षा तथा स्वावलबन से रहित बुरी स्थिति मे पड़ी हुई है । गृह व्यवस्था तथा शिशु-पालन भी उनके अज्ञान के कारण अस्त-व्यस्त है । राष्ट्र का आधा अग इस प्रकार अपाहिज पड़ा हो तो यह भी प्रगति मे एक बड़ी बाधा ही मानी जाएगी । हमारे समाज मे अच्छाइयाँ भी बहुत है □ अनेक देशो की अपेक्षा हमारा समाज एव वयक्तिगत चरित्र

काफी ऊँचा है, फिर भी उपरोक्त □□□□□□□कम हानिकारक नही है, इन्हे दूर करने के लिए यदि कोई प्रयत्न नही किया गया तो जिस गति से प्रगति होना चाहिए, वह न हो सकेगी । आर्थिक दृष्टि से यदि हमारी उन्नति □□ □□ □□, वह सामाजिक हीनावस्था के कारण कुछ विशेष उपयोगी साबित ना हो सकेगी । सरकारी शिक्षा-पध्दति धीमी और अपूर्ण है । उसे तेज करने एव उससे छूटे हुए धार्मिक विषयो को पूरा करने के लिए गौर सरकारी प्रयत्न अत्यावश्यक है । संक्षेप्त मे नैतिक, बौध्दिक, □चारिक,आध्यात्मिक, सामाजिक तथा धार्मिक स्तरपर समग्र क्रांति की आवश्यक□□ □□

समग्र क्रांति के लिये क्या करें :- ऐसे प्रचलनो को निरस्त किया जाना चाहिए, जो विषमता, विघटन अन्याय □□ औचित्य के पृष्ठपोषक है । पारस्परिक स्नेह, सामजस्य सहयोग का विस्तार करने वाली वसुदैव कुटुबकम् कं, आत्मवत् सर्वभूतेषु के दृष्टि पोषक प्रथा-प्रचलनो को ही मान्यता मिले और शेष को औचित्यकी कसौटी पर खोटी सिध्द □□□□□ □□दान मे झाड़ - बुहारकर फेक दिया जाए । अपने समाज मे नर नारी के मध्य बरती जाने वाली भेद नीति, जन्म जाति के आधार पर मानी जाने वाली ऊँच-नी□, भिक्षा व्यव□□, □□□□□, □□-विवाह अनमेल विवाह विवाहोन्माद अगणित कुप्रथाएँ आदि को हटाने का प्रयास करना होगा । सभी जानते है कि खरचीली शादियाँ हमे दरिद्र और बेइमान बनाती है । फिर भी हम उस सर्वनाशी कुप्रथा को छाती से लगाए बैठे है । इन सभी कुप्रचलनो मे भ्रांति और अनीति बेतरह गूँथी हुई है ,पर परपरा के नाम पर उन्हे अपनाया और सर्वनाश के पथ पर □□ते चला जा रहा है । यह दुर्बुध्दि रूकनी ही चाहिए। सभी प्रकार की बुराइयो को हटाने मे हमारा समाज सहकारी □□□□□ □□□□ उसकी अभिनव सरचना मे कौटुबिकता के शाश्वत सिध्दातो का समावेश किया जाए । जाति, लिग की विषमता न रहे और न आर्थिक दृष्टि से किसी को गरीब-अमीर रहने दिया जाए । न कोई उध्दत□, अहकारी, धनाढ्य बने और न किसी को पिछ□पन की पी□□ भत्सेना □□□ □□□□ □□□। कही कोई □□□□□,उपद्रव उभरे तो उसे लोकशक्ति द्वारा इस प्रकार दबोच दिया जाए कि दूसरो को वैसा करने का साहस ही शेष न रहे । मिल-□□□□□ खाने और हिल-मिलकर रहने की समाज -सरचना के अतेगत ही मनुष्य व□□ □□- शाति से रहने का अवसर मिल सकता है । मनुष्यो मे पाई जाने वाली भ्रातियो, विकृतियो, दुष्प्रवृत्तियो से जूझना कठिन लगता है । 'सत्य मे □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□' इस उक्ति के अनुसार श्रेठता का वातावरण भी इसी प्रकार बन सकता है, जिस प्रकार कि मुट्ठी भर लोगो ने अग्रगामी होकर दुष्टता भरे प्रचलनो से लोकमानस को भ्रष्ट करके रख दिया है । चिंतन की विकृति ने हमे सकीर्ण स्वार्थों की पूर्ति मे सुख-सुविधा खोजने का अभ्यस्त कर दिया है । उच्छृंखलता, उ□□□□, अहम का प्रदर्शन, □□□□□□□□ □□□, विवेक का विसर्जन रही सब कारण है, जिनमे उलझकर मनुष्य ने□□□□□ स्वरूप विस्मृत कर दिया और असुरता को अपना बैठा । कुत्साएँ □□□ □□□□□□उसे साक्षात नारकीय स्थिति मे डाले हुए है । प्रारंभिक प्रयास चिंतन की अवाछनीयता के निवारण से आरभ होना चाहिए । बौध्दिक क्रांति का प्रयोजन यही है । इस भावनात्मक नवनिर्माण के प्रयास को हम लोग 'ज्ञानयज्ञ'के नाम से भी जानते है । नैतिकता के लिए एक दूसरे को उपदेश करता रहे तो काम नही चल सक , सृजन जीवन का एक आवश्य□ □□ □□,उसे दैनिक नित्य कर्मों मे सम्मिलित रखा जाना चाहिए । यह तथ्य जब तक जन साधारण के मस्तिष्क के साथ ही अभ्यास मे भी न उतरेगा, □□ □□ उद्देश्य की पूर्ति न हो सकेगी। एक को देखकर दूसरे को उत्साह आता है । रचनात्मक प्रवृत्तियो को कार्यान्वित करने से न केवल राष्ट्र निर्माण की सभावनाएँ मूर्तिमान होती है, वरन हर व्यक्ति मे निम्न द□- दुर्गुण होते है, जैसे अनैतिकता आलस्य, अस्वच्छता, आशिष्टता, □□□□□□□□□, □□□□, □□□□□, व्यस□, दुर्भावनाएँ, निष्ठुरता, □□□□□, □□-□□, नारी तिरस्कार, विवादोन्माद, अधविश्वास, कामुकता आदि दोष-

दुर्गुणो मे से कुछ न कुछ तो हर व्यक्ति मे पाए जाते है । उनमे से एक-दो □□ □□ □□□ दिया जाए तो उससे व्यक्ति एव समाज के उत्थान मे बड़ी सहायता मिलती है । जिस प्रकार बुरी आदते छूत की बीमारी की तरह फैलती है और दूसरो को भी वही लत लगाती है, उसी प्रकार उनका त्याग करने और आदर्शवाद अपनाने की प्रवृत्ति भी यदि पनपे तो उसका प्रभाव अनेक लोगो पर □□□ □□□□ □□□□ उसी प्रकार प्रभावित होते है तथा यह श्रृखला तेजी □□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□

समस्त कठिनाइयो का एक ही उद्गम है - मानवीय दुर्बुद्धि । इसे हटाए बिना एक भी समस्या हल □ □□□□ □□ □ एक भी कठिनाई का समाधान निकलेगा । आध्यात्मिक स्तर पर ही समाधान सभव है । जिस उपाय से दुर्बुद्धि को हटाकर सदबुद्धि स्थापित की जा सके, वही समाधान कारक मार्ग हो सकता है । इस प्रकार सामाजिक बुराइयां मिटाने/ खत्म करने के लिए हर व्यक्ति, सामाजिक तथा धार्मिक सगठनो को इन्ही गुत्थियो को सुलझाने मे आगे □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □

समग्र क्रांति को एक सघर्षात्मक प्रक्रिया द्वारा ही पूरा किया जा सकेगा । अवाछनीयता की दा□ मे पब खून □□ □□□□ □□तब वह अपने निहीत स्वार्थों को सहज ही छो□ने के लिए तैयार नही होती । पशु प्रलोभन से प्रसन्न □□□□ □□□□ □□ से डरता है । समझाने से हृदय बदलने के लिए जिसे तैयार नही किया जा सकता, □□□ □□□□ □□ कम नही है । उसे दड और विरोध से ही नियंत्रित रखा जा सकता है और निरस्त किया जा सकता है । कहा गया है कि धर्म स्थापना □□□□-साथ अधर्म के उन्मूलन को भी समान महत्व देना होगा । बगीचे की सिचाई के साथ-साथ माली □□ □□□□, निराई और छटाई भी करनी प□ती है। माता बच्चो को प्यार □□□□□□□□ □□□ □□□□□□ भी नही चूकती । सामाजिक परपराओ मे मूढ़ मान्यताओ और अधविश्वासो की भरमार है । शोषण और उत्पीड़न □□-नए आवरण पहनकर आता है और भलाई की आ□ मे बुराई के विष बीज बिखेरता है । मुख मे राम, बगल मे छुरी वाली उक्ति आज पग-पग पर चरितार्थ हो रही है । राजनीतिक क्षेत्रो मे कथनी और करनी मे कोई साम्य नही दिखता । अतेराष्ट्रीय क्षेत्र मे जो हो रहा है, उससे मनुष्य जाति के भविष्य पर प्रश्न □□ □□□□□ अपनी दुर्बलताओ से हर किसी को स्वय□□□□□ □□गा । परिवार को सुधारने के लिए मत्रणा , प्रेम आग्रह यहां □□ कि मौन धारण, असहयोग आदि का सहारा लेकर उन्हे सन्मार्ग अपनाने के लिए विवश करना होगा । समाज मे फैली हुई दुष्प्रवृत्तियो से असहयोग, विरोध, सघर्ष के तीनो उपाय काम मे लाने □ड़ेगे□

****

“मनुष्य सुबह से शाम तक काम करके इतना नहीं थकता, जितना क्रोध या चिन्ता से एक घंटे में थक जाता है।„

-जेम्स ऐलन

कुत्तों का सम्मेलन

-संजय बिदयांता , वै. स. प्रा.मौ.के.नागपुर

कुत्ता और उसका मालिक, □□□ □□ □□□□□□
राह निजेन, □□ □□ □□□यो की दौड़
घटी दुघेटना अचानक, चुकी लगी थी उनमे होड़,
दोनो गये दब चार चक्को के तले , निपट गया मालिक ।
बच गया कुत्ता और हो गया अचभा,
□□ □□□□ □□, □□ □□□ □□ □□ □□ निकट के खबा ।
लोग थे एकत्रित , □□□ □□□ □□□ □□□□□,
□□□□□□,□" कुत्ते की मौत मार□ □□ □□□□ ! "
कुत्ता था लहुलुहान, □□□ □□□□ ,
नही समझ पाया था , □□□ □□□□ □□ □□ □□□
□□, वक्त उसी उसने ठान ली ,
सिखाउगा सबक इन नादानो को ,
किया जिन्होने कुत्तो का अपमान ,
परिणाम स्वरुप कुत्ते कइ हुए सम्मिलित,
कुत्तो के इस सम्मेलन मे , कुछ □शी थे अन्य विदेशी
जिन्होने सभा मे लगा डाली इसानो की पेशी ।

पहले सबसे पधारा वह , जो सीमा पर था रक्षक कुत्ता ,
देश के लिए जान न्योछावर भी, करने को था तैयार कुत्ता ।
दिन रात की ट्रेनिग कर वह , रक्षा बलो का साथ ले वह ,
दुश्मन पर घात करता वह , दुश्मन को □□ □□□□ □□ ,
□□□ □□□□,
जहा पर होगी बम की निपटान ,
बस वही पर है हम विद्यमान । (BDDS)
देखा है मैने ,
वातावरण की वह माया अपरपार ,
साथ तापमान की वह मार, □□□□□ □
फिर भी देश की रक्षा थी उनकी सर्वोपरी,
जान लुटा गये थे सीमा पर वे प्रहरी ।
सुरक्षित रहे सीमा हमारी,
यही थी हमे और बलो को प्यारी ।

यारो , क्या कहना इन इसानो का ?
□□ □□□ □ □□□□ , बलिदान उन बलो का ,
वह खाक क्या मानता, बलिदान हम कुत्तो का?
□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□,
जो देश पर मर मिट जाते है,
खुश हु यारो, के नाम असल मे अमिट,
हम हो छोड जाते है ।
कौन समझाए इन्हे कि, □□□□□□ □□ □□□□ □□,
ऐसी करनी से हो देखो, बिगडे सारे अनुपात है ।
इन्हो शहर बडे - बडे मे, कभी छोटी - छोटी बाते होती है ,
बडी बातो को छोटा कहकर ,मुकरना कतेव्य से इन की शान होती है ।
बात रखता हू इस सभा मे, □□□□ क्या दू इसानो को ,
कमे ऐसा कुछ कर जाओ, के शीश झुके सामने इसानो के ।

अग्रसर था सभा , अपने समापन की ओर ,
बड चला था वही कुत्ता , आखिर मच की ओर ।
बूझ गया मै , क्यो लोग कहे " कुत्ते की मौत मारा गया "
न्यायाधीश होते हुए भी, कभी न्याय सगत सा काम न किया ,

बारी थी अब उस कुत्ते की , जिसने सेवा की थी पोलीस की,
सुना था जिसने लोगो को कहते, सबोधन से इस सज्ञा (कुत्ता) की ।
□□□□□ □□□ □□,उन सारे अत्याचारो की ,
लठ्ठ की मार से जो न पिघ , वे सहे बबरता की मार भी ।
बीच रास्ते पर जो, हो गई गल्ती,
□□ □□□रसीद भुगतान की ,
अनायास ही जुबा से निकली ,
हमारे नाम की गाथा माला भी ।
हमने तो बस मदद की है, चोरो को पकडवाने की,
जरूरत ना है रुपयो की, बस जरूरत है दो रोटी की
□□□□□ □□□ □□,क्या सभी होते ऐसे है ?
जी नही , पोलीस अक्सर, जीते इमान से है ।

□□ □□ □ला एक देशी कुत्ता , जिसे रज था विदेशी से
के पाप किया क्या हमने , जो गायब हो गये हम गली और कूचे से ?
हर घर देखो पाला है वही , बस शेफडे जमेन और अल्सेशीयन ,

□□□□ □□□ □□□ □□□ □ □□, फिर भी देखो ये डॉबरमैन ।
मैं ना जानू लोग क्यो कहते , वे□“ पूछ कुत्ते की टेढी है “ ?
टेढी नही बल्कि, □□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□
पूछ की महीमा , मनुष्य तुम क्या जानो ?
□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□,
हिला हिलाकर फिर काम सारे ,
□ □□□□ □□□□ □□ □□□□
पूछ ना हो तो मूछ सही,
नमक हलाल ना हो तो हराम सही,
इमान ना हो तो बेइमान सही,
थाली जिसमे खाते हो और छेद उसी मे करते हो ।
□□□ □□□□,
□□□प्यासे और ललक है आपके प्यार को पाने की ,
और चाहे वह पूछ हिलाकर ही, आस है हमे प्यार को पाने की ।
विदेशीयो का मैं इन, क्या करू ?
□□□□ □□□□□□□□ □□,
जिनके बिन मनुष्य तुम्हारा जीवन ,
क्या अधूरा जीना सभव है ?

अब बारी थी उन कुत्तो की जो शहर बडे से आते थे,
सुन कहानी उनकी भी, दिल हमारे भर आते थे ।
निभेया जैसे निर्दोश बच्चे , जाने कितने बर्बाद हुए ?
बतोव हम जैसा कहकर देखो, हमको ये बदनाम किए ।
अम्ल फेक कर, कई नादानो के चेहरे ये बिगाड दिए ,
और भ्रूण हत्या के कुकर्मो को , इन्ही मनुष्यो ने अजाम दिए ।
उत्पीडन दहेज से ग्रसित , महिला से भी न वह न्याय किया ।
□□□ □□□ □□ □□□ , लोग न अपना दुख जाहिर किए ,
ऐसी ही तो मौत देखो , अक्सर कुत्तो के जीवन मे हुए ।

कमे इसान के कभी , शेर दिल से होते है,
और चतुराई मे वे, सियार से आगे होते है ,
सुरीली कठ को वे, कोयल जैसे कहते है ,
फिर कुत्तो की वफा और इमान के गुण को,
ये इसान क्यो भूल जाते है , क्यो भूल जाते है ?
****

जलप्रबंध

-डॉ. जी.डी.मिश्रा,स.मौ.वि.-II, मौ.के.भोपाल

जल ही जीवन है । आज से हजारो वर्ष पहले प्रबल भूकम्पो के कारण हिमालयी क्षेत्र मे भूमि की परिस्थिति ऐसी बदली की सरस्वती नदी का जल स्रोत लगभग सूख गया एव यह यमुना की ओर बढ़ा जिस क्षेत्र से सरस्वती [illegible] की वजह से हडप्पा इत्यादि सिंधु घाटी की सभ्यता के [illegible] कारण लगभग समाप्त हो गए और आज नाम मात्र के लिए सरस्वती [illegible]-घर के नाम से पहचानी जाती है । पृथ्वी [illegible] 97 प्रतिशत जल समुद्रो का खारा पानी है और केवल तीन प्रतिशत मीठा पानी है । यह तीन प्रतिशत पानी हर [illegible] छोटे से छोटे कीड़े से लेकर मनुष्य [illegible]

विश्वभर मे अनेक देशो मे जल इतना बहुमूल्य हो गया है कि इसके लिए युध्द [illegible] भारत और पाकिस्तान का है जिनके बीच मे सिंधु नदी के वितरण के सबध मे 'इडस वाटर ट्रीटी' ना[illegible]-जब भारत पाक युध्द [illegible]-तब पाकिस्तान यह आक्षेप लगाता है कि भारत अपने क्षेत्र मे बाध बनाकर सिंधु नदी मे पानी की ..... को प्रभावित करता है ।यह युध्द की स्थिति दोनो देशो के भू-क्षेत्र [illegible] कारण नही है बल्कि जल के बँटवारे को लेकर है ।

भारतीय सविधान मे जल प्रबधन से सबधित प्रावधान है । अनुच्छेद 246 की 7 वी अनुसूची मे जल प्रबधन सबधी अधिनियम बनाने का अधिकार ससद एव राज्[illegible] की विधानसभाओ को दिया गया है । इस अधिकारो के अधीन [illegible] अधिनियम केन्द्रीय एव राज्य स्तर पर बने है । उनका पालन कितना हो रहा है यह कहना मुश्किल [illegible] प्रकृति का नियम है कि जब धरती गर्म होती है तब समुद्रो से वाष्प के रूप मे जल आकाश मे उपर उठता है और [illegible] ठडक है तो यह वाष्प बादलो के रूप मे परिवर्तित होती है हवा का रूख ठडे समुद्र से गर्म धरती की ओर होता है ज[illegible]ड़ो आदि से टकराकर बादल वर्षो के रूप मे धरती पर गिरते है । यह तीन प्रतिशत मीठा पानी इसी प्रकार से बनता है इस कारण धरती समुद्र, समुद्र का खारा पानी एव धरती पर उपलब्ध मीठे पानी का अत्यत ही निकट रिश्ता है । जब हम धरती के आकार और उस पर जैविक विविधता वाले [illegible]-पौधो से छेड़खानी करते है तब वर्षो, जल प्रबधन एव जल उपलब्धत[illegible]

यदि भारत मे जल प्रबधन सही हो, जल की पर्याप्त उपलब्धता तो और जल वितरण एव उपयोग मे समानता हो तभी भारत मे हर नागरिक को अपना वह अधिकार प्राप्त हो सकेगा जो जन्म सिध्द है । अर्थात् स्वच्छ जल की उपलब्धत[illegible]

****

"नि:शस्त्र अहिंसा की शक्ति किसी भी परिस्थिति में सशस्त्र शक्ति से सर्वश्रेष्ठ होगी।"

-महात्मा गांधी

जीने का अंदाज

- डी.पी.सांधोकर, स.मौ.वि.-I,प्रा.मौ. के.,नागपुर

जीतने के लिये कोई चीज है तो - प्रेम
देने के लिये कोई चीज है तो - दान
लेने के लिये कोई चीज है तो - ज्ञान
कहने के लिए कोई चीज है तो - सत्य
रखने के लिये कोई चीज है तो - इज्जत
दिखाने के लिये कोई चीज है तो - दया
पीने के लिये कोई चीज है तो - क्रोध
खाने के लिये कोई चीज है तो - गम
फेंकने के लिये कोई चीज है तो - ईर्ष्या
छोड़ने के लिये चीज है तो - मोह

सुविचार

1. ***प्रसन्नता साधनों से नहीं आती, आपके विचारों से, आपके जीने के अंदाज से आती है । जो जितना विचार सम्पन्न उतना ही सुखी है ।***

2. ***जरूरत के मुताबिक जिंदगी जियो, ख्वाहिशों के मुताबिक नहीं । क्योंकि, जरूरत तो फकीरों की भी पूरी हो जाती है और ख्वाहिशें बादशाहों की भी अधूरी रह जाती है ।***

3. ***रिश्ते (दोस्ती) वो होते है,***
   जिसमें शब्द कम और समझ ज्यादा हो,
   जिसमें तकरार कम और प्यार ज्यादा हो,
   जिसमें आशा कम और विश्वास ज्यादा हो,
   भले ही धर्म कम हो पर कर्म अच्छे हो ।

4. ***अच्छी चीज, अच्छे व्यक्ति, अच्छे दिन'' इनकी कीमत चले जाने के बाद मालुम होती है ।***

5. ***''झुको वहीं जहाँ किसी के दिल में दुसरों को झुकाने की जिद ना हो'' ।***

****

मौसम विज्ञान की शिक्षा सफल खेती का चमत्कार

-डॉ. रवीन्द्र आकरे, सहायक मौसम विज्ञानी -II,
महानिदेशक का कार्यालय,नई दिल्ली

मौसम विज्ञान से यह ज्ञात हुआ है, की मौसम की घटनाएँ वायुमण्डल मे उपस्थित जलबाष्प तथा □□□□शियो की गति के कारण उत्पन्न होती है। 'आदित्य जायते वृष्टी' क□ □□□ □□की सूये की स्थिति एव उसकी प्रखर प्र □ के कारण उत्पन्न स्थिति से मौसम मे परिवतेन, दिन-रात और श्रुतु मे □□□ □□। मौसम के परिवतेन के रूप मे □□ वषो, सदी, गमी, □□, □□□, चक्रव□, □□, नमी की मात्रा इन प्रक्रियाओ को ठीक से उल्लेख सबसे पुराने वेद ऋग्वेद से दिया है । मौसम कि घटनाएं मनुष्य या प्राणी मात्र को और वनस्पतियो क भी प्रभावित करता है। हमारी खेती मौसम के परिवतेन से ज्यादा जु□ हुयी है। इसलिए अच्छी फस □□□□ती सफल करने हेतु किसानो को मौसम विज्ञान की शिक्षा जरूरी है।

मौसम विज्ञान मे □□□ □□□□□□□□इन शब्दो का प्रयोग होता है। मौसम का मतलब वि□शिष्ट ठिकानो का अल्प □□□□धि मे □□□□, □□, दि□ □□, वषो, सदी इनका सकेत देता है। इस जानकारी के आधार पर किसान □□□ उस दिन की खेती मे काम करने की योजनाएँ कर सकता है। । इसे उनका व्यय एव कष्ट सही दिशा मे होता है, उसकी मद□ उसके उन्नति मे होती है, यह जानकारी किसानो का मौसम विज्ञान विभाग मे 30 वषे के औसत के आधार पर किया जाता है। इसे जलवायु को देखते हु□ □□□ □□□मे □□ 15 भागो मे □□□ □□□ □□ □□□□ □ □□ पर किसान को फसल का चयन करने मे मदद होती है। भविष्य की खेती बाबत नितियो तैयार □ □□ □□□ □ प्र□□□ □□ □□□□□□बनाने का आधार मिलता है। मौसम विभाग द्वारा पूवानुमान दिया जाता है । जो तीन प्रकार □□□□□□! दीघानुमान, □ध्यम एव अल्प कालावधि का अनुमान समाविष्ट □□ दीघानुमान जो एव□ वषे □□ □□□ □,□□□□□किसान को अनुमान का सकेत मिलता है । □□□□किसान अपनी पानी की व्यवस्था कर सकता है। □□□ □वेस्टीग, प□लो का चयन आदि यह अनुमान भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा अप्रैल और जुलाइ मे दिया जाता है। उसे खरी□ और रब्बी फसलो का अदाज कराया जा सकता है। मा □□ आगमन तथा वापसी की तिथि विभाग द्वारा दि□ □□□ है। इस वषे मान□□ □□□ □□□, मतलब औसत से कम या ज्या , □□से किसान पानी के ससाधनो की तैयारी कर सकता है□मध्यम अनुमान एक सप्ताह तक होता है । जिससे किसानो क□ बीजो की बुवाइ, पौधो की रूपाइ, फसलो की कटाइ आदि काये निधारित करने हेतु उपयोगी होती है। तीसरा अनुमान अल्प कालावधि का जिसे ट्रान्सपोटे, हावेस्टीग, की□□ □ □ाषि □□क दवाइयो की स्प्रे एव अन्य रासायनिक खतो क □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□, भारत मौसम विज्ञान द्वारा वेब WWW.imd.gov.in, WWW.monsoon.com, WWW.weather.com, Doppler Weather Radar, Indian Remote Sensing satellite, District level forecast □□□ □□□□ सरकार द्वारा किसान चॅन□ □दि । मौसम के अनुसार किसान फसलो का चयन हमारे आधुनिक कृषि मे हम □□□ारिक खेती के अलावा औषधीय, □□-फुल जिन्हे कम पानी की आवश्यक□□ □□□ □,□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ मुसली, □श्वग□□, रतनजोत कालिहारी जो प्र□ति से समायोजित करने की क्षमता रखते है, इन पौधो को विपरीत मौसम का प्रभाव नही □□□ □□ □□ □□□ □□से आय अच्छी प्राप्त होती है। रेशिम की खेती भी इस प्रकार कम पानी एव मौसम की अनुकूल क्षमता रखती है! चन्द्राषु , इसबगोल की भी खेती हमारे मिट्टी □□गुणो को देखते हुए

हम अच्छी फ□□ □□ □□□□□□ यदी हमारी खेती मे अच्छी नमी है । पयोप्त पानी तो हम जैविक खेती भी कर □□□□□,हम ज्ञात होना चाहिए की कौनसी फसल को कितना तापमान एव पानी की आवश्यक□□ □□□ □□□□□

चावल - 20-30 डिग्री सेल्सियस तापमान, 350-700 मि.मि. पानी

चावल - 15-20 डिग्री सेल्सियस तापमान, 450-750 मि.मि. पानी

सोयाबिन - 24-30 डिग्री सेल्सियस तापमान, 550-500 मि.मि. पानी

प्याज - 15-20 डिग्री सेल्सियस तापमान, 350-500 मि.मि. पानी

टमाटर - 18-20 डिग्री सेल्सियस तापमान, 400-500 मि.मि. पानी

गन्ना - 22-30 डिग्री सेल्सियस तापमान, 1500-2500 मि.मि. पानी

गोबी - 23-30 डिग्री सेल्सियस तापमान, 350-700 मि.मि. पानी

हम किसान पर निर्भर है की वे अच्छी गुण एवं मात्रा का अनाज अपने खेतो मे □□□□□□ □□, □□□□□□□□□ जीव जतु को वातावरण की हव , पानी एव तापमान की ब□□□□□□जीवि□ □□□□□□□□□श्यक□□ □□□ □□□□ □□ सब हमे मौसम विज्ञान के अध्ययन से प्राप्त होता है□ □□□ की जमीन को खोदना एव जमीन तैयार करन , □□□, कचरा निकालना सिचाइ, स्प्रे करना, प्रदुषण रहित रखन , □□□, थ्रेडिग, भ□□□ □□□□न्सपोटे आदि बाते व्यवस्थापन मे □□□ है। जो मौसम विज्ञान द्वारा हमे वातावरण की भौतिक स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है। □□□□ □□ □□ अच्छी फसल हासिल करने मे ले सकते है। पौधे को कब और कितना पानी की जरूरत है। इसके अनुसार सिचाइ की जा सकती है। जैसे नियंत्रित नमी, □□पमान एव और विकिरण मे ही पौधे को अच्छे फल-□□□ □□□□□ जमीन की उपजाउ या उवेरता यह जब वषी 1 मिमि. प्रतिदिन, हवा की गति 3 किमी प्रति घटा और मिट्टी की नमी 30-80 प्रति□त होती है। किटक □□क स्प्रे का प्रयोग हमे योग्य स्थिति मे करना चाहिए। जब वषी नही है, मिट्टी की नमी 90 प्रति□त से कम है और हवा की गति 25 कि.□□. प्रति घटे से कम है । जब जमीन की नमी 50 प्रति□□ □□ □□ होती है तब साधारणतः सिचाइ की जाती है, प□□□□□ □□ □□□ 30 प्रति□त कम होती है इस स्थिति मे सूखा की स्थिति उत्पन्न होती है। वातावरण मे मौसम की स्थिति देखते हुए किसान अपनी योजना कर सकता है। जब चक्रवात आता है, तब तेज वषी, तेज हवा और ठण्ड एव गरम हवा की आव□□ होती है। वातावरण की भौतिक स्थिति मे तापमान, □□□, एव मिट्टी की नमी इन घटको का विचार किया जाता है। जो पौधे के विकास के लिए □□श्यक□□ □□ □□ □□ एव पौधे को विकसित होने के लिए विषेश तापमान की जरूरत होती है। 45 डिग्री एव 60 डिग्री तापमान मे पौधे के कि□□मर जाते है। जब कभी पौधे पर बफे जम जाता है, तब प्रकाष सलेशन की क्रिया मे बाधा उत्पन्न □□ □□□□ □□,जिससे पौधे को बीमारी उत्पन्न होती है। इस समय किसान कृषि विशेषज्ञो □□ □□□□शे पौधे के लिए हवा का भी महत्व है, हवा पौधे के विकास मे बाधा उत्पन्न करती है। मिट्टी की नमी पौधे मे पानी की □□श्यक□□ □□□□□□ □,जब मिट्टी की नमी 30 प्रति□त से कम तब प्रक□ □□□□ की क्रिया कम होती है। मिट्टी का तापमान च्भ् को प्रभावित करता है । च्भ् ठण्ड के दिनो □□□□ती है। तो गमी मे कम होती है। जमीन म मैग्नीज, □□□ □□ □□□ □□ □□धो के विकास हेतु आवश्यक□□

अत मे यह निष्कषे है। की, किसान अपनी प्रगति हेतु मौसम विज्ञान कृषि वैज्ञानिक एव □□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ की उन्नति □□□□□

****

हिंदी पखवाड़ा-2015 के कार्यक्रमों की झलक

2015
प्रादेशिक मौस
विमानपत्तन ,

विमानपत्तन ,

हिन्दी पखवा
2015
प्रादेशिक मौसम के
विमानपत्तन ,नागपु

हिन्दी पख
2015
प्रादेशिक मौस
विमानपत्तन ,

मौसम केंद्र भोपाल हिंदी पखवाड़ा-2015 के कार्यक्रमों की झलक

ऋतुरंग

अंक : 2

वर्ष : 2015

परिकल्पना एवं मुद्रण,
प्रादेशिक मौसम केंद्र, नागपुर - 440005.
दुरभाष : 2283394 / 2282398 फैक्स : 2284266
ई-मेल : hindirmc@gmail.com
वेब : www.imdnagpur.gov.in